चन्दामामा
सितम्बर १९६३
60
Vapa

डाबर
(डा. एस. के. बर्म्मन)
प्राइवेट लि०
कलकत्ता
लालशर
(डाबर-बालामृत)
कैल्सियम
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
'पुष्टई' में
बच्चों को
सुलभ हैं।
खेलने-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत

चन्दामामा

सितम्बर १९६३

बच्चों की ज़िन्दगी न्यारी ही होती है।
उन्हें खेल-कूद से बड़ा ही प्यार होता है...
और उन्हें ऐसा ही प्यार है माल्टेक्स
बिस्कुटों से। साठे माल्टेक्स बिस्कुट
उन्हें अतिरिक्त शक्ति देते हैं जो कि
क्या बच्चों और क्या बड़ों की तेजस्वी की
ज़िन्दगी के लिए बहुत ही ज़रूरी है।

पीढ़ियों के लिए शक्ति!

आन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय नृत्य कलाकार
कमला लक्ष्मण
की
प्रशंसा पात्र
फेशन
नमूना
इन के लिए
रंग रंग के
सभ्यता
श्री वेन्कटेश्वर सिल्क साड़ियाँ
श्री वेन्कटेश्वर
सिल्क पैलेस
स्त्रियों के सुन्दर वस्त्रों के लिए
मनोहर स्थल
१८४/१ चिकपेट, बेंगलूर-२.
फोन : ६४४०
तार : "ROOPMANDIR"

सितम्बर १९६३

आपका आकर्षक पत्र करीब १॥ साल से बराबर पढ़ रहा हूँ। पत्र बड़ा ही मनोमोहक व आकर्षक है। जब भी यह पत्र खरीद करके लाता हूँ तो सबों में होड़-सी लग जाती है कि कौन पहले पढ़े। क्या पता क्या जादू है? मैं हृदय से इस पत्र की उन्नति की कामना करता हूँ। भविष्य में यह और आकर्षक बने यही मेरा अभिमत है।

शशांक जैन, तिनसुकिया

आप "चन्दामामा" में आखिर के पृष्ठों पर "संसार के आश्चर्य" तथा शुरु के पृष्ठों पर एडवर टाइजमेन्ट के फोटो आदि देकर पृष्ठ बेकार करते हैं। मेरा ख्याल है कि आप उनकी जगह अगर "चुटकुले" या कोई "कार्टून" वगैरह छाप दे तो अच्छा है।

आकाशचन्द्र घोष, गाजियाबाद

मैं "चन्दामामा" करीब १५ माह से पढ़ रहा हूँ। मैंने इस तरह की कोई पत्रिका नहीं देखी है। मैं और भी पत्रिकाएँ लेता हूँ मगर मुझे उनमें कोई आकर्षण नहीं दिखाई देता। जुलाई अंक में "भयंकर घाटी" "गन्धर्व सम्राट की लड़की" "किष्किंधाकाण्ड" विशेष पसन्द आयी। आप फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता के बदले में वर्ग [illegible] "चन्दामामा" में चार चाँद लग जायेंगे।

होलाराम, भिलासपुर

आपके फ़ायदे की बात...
ब्लैकबर्ड पेन
इस्तेमाल कीजिए

विश्व-
विख्यात

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

"चन्दामामा" हम प्रायः कहते आये हैं, प्रधानतः कहानियों की पत्रिका है।

फिर भी हम गेय कथायें देते आये हैं। उनमें भी प्रधानता कहानी की रहती आयी है।

कई पाठक यदि गेय कथायें चाहते हैं तो कई नहीं चाहते हैं। कई का यह भी कहना है कि वर्तमान "चन्दामामा" के चौखट में शायद वे खपती भी नहीं हैं।

हम चाहेंगे कि आप अपनी राय लिख भेजें, ताकि हम जान सकें कि हमारे पाठक इसको चाहते हैं कि नहीं। अगर वे चाहते हैं तो किन विषयों पर चाहते हैं।

वर्ष : १५ सितम्बर १९६३ अंक : १

भारत का इतिहास

देवगिरी के राजा रामचन्द्रदेव ने सुल्तान अलाउद्दीन को लगातार तीन साल तक कर न भेजा। यही नहीं सुल्तान से पराजित गुजरात के राजा द्वितीय रायकर्णदेव को उसने शरण भी दी। इसलिए १३०७ मार्च में सुल्तान ने देवगिरी पर हमला करने के लिए मलिक काफ़ूर के नेतृत्व में सेना भेजी। काफ़ूर ने देवगिरी के आसपास के ईलाके को तहस नहस कर दिया। रामचन्द्रदेव ने हार स्वीकार करके सन्धि करनी चाही। सुल्तान ने उसको दिल्ली बुलवाया। उसका सत्कार किया और उससे एक सन्धि कर ली, जिसके अनुसार वह दिल्ली का सामन्त होने को और कर देने को मान गया।

१३०३ में अलाउद्दीन का काकतीय प्रतापरुद्र पर आक्रमण असफल हो गया था। इसलिए उसने १३०९ में काफ़ूर को हमला करने के लिए भेजा। इस हमले का उद्देश्य काकतीय राज्य को दिल्ली के अन्तर्गत लाना नहीं था, बल्कि वहाँ की श्री सम्पदा को लूटना था। प्रतापरुद्र ने वारंगल के किले में सुरक्षित रहना चाहा, पर उसे शत्रु के सामने घुटने टेकने पड़े। १३१० मार्च में उसे सन्धि करनी पड़ी। उसने शत्रु को १०० हाथी, १००० घोड़े, अपरिमित धन, मणि वगैरह दिये। दिल्ली को कर देना भी स्वीकार किया।

इस विजय के बाद सुल्तान की नज़र सुदूर दक्षिण के राज्यों पर पड़ी। वहाँ के मन्दिरों में अनन्त धनराशि थी। १८ नवम्बर १३१० में, मलिक काफ़ूर ख्वाजा हजील के नेतृत्व में दिल्ली से होयसल

राज्य पर हमला करने के लिए निकली। यह सेना जब द्वार समुद्र के पास पहुँची, तो होयसल का राजा, वीरबल्लाल तृतीय युद्ध के लिए तैयार न था। शत्रु की अधिक संख्या में देख उसने अपनी सारी सम्पत्ति उनको सौंप दी और सन्धि के लिए मान गया। यही नहीं शत्रु ने ३६ हाथी पकड़े और मन्दिर का धन भी लूटा। साथ साथ होयसल के राजकुमार को भी ले गये।

द्वार समुद्र में १२ रोज रहने के बाद मलिक काफ़ूर अपनी सेना को पाण्ड्य राज्य में ले गया। उस राज्य को वे माबार कहते थे। पाण्ड्य राज्य की आपसी फूट से शत्रुओं को फायदा हुआ। पाण्ड्य राजा कुलशेखर के सुन्दरपाण्ड्य और वीरपाण्ड्य दो लड़के थे। सुन्दरपाण्ड्य राज्य का उत्तराधिकारी था। वीरपाण्ड्य को उत्तराधिकार का कोई हक न था। चूँकि कुलशेखर उसको अधिक चाहता था इसलिए उसने उसको अपने बाद राजा बनाना चाहा। १३१० के मई मास में सुन्दरपाण्ड्य ने पिता की हत्या करके राज्य लेना चाहा। भाइयों में युद्ध हुआ। नवम्बर में सुन्दरपाण्ड्य पराजित हुआ और उसने मुसल्मानों की सहायता माँगी।

१४ अप्रैल १३११ में मलिक काफ़ूर पाण्ड्य राजधानी मदुरा आया। मदुरा निर्जन थी। वीरपाण्ड्य अपनी रानियों के साथ भाग गया था। मुसल्मानों ने अरक्षित मदुरा को लूटा। ५१२ हाथी, ५००० घोड़े, ५०० मन तरह तरह के रत्न आदि जमा कर लिए। "माबार" देश को लूटकर, जब वह दिल्ली पहुँचा, तो उसके साथ ६१२ हाथी, २०,००० घोड़े और ९६,००० मन सोना था।

इस प्रकार सारा दक्षिण देश दिल्ली के साम्राज्य में आ गया। दिल्ली के साम्राज्य का विस्तार करनेवाले अल्लाउद्दीन के शासन के बारे में कई जानने लायक बातें हैं। उसने अपने शासन में मौलवियों के अधिकार न के बराबर कर दिये। शासनतंत्र को उसने धर्म निरपेक्ष किया।

अल्लाउद्दीन के राज्य में कई के हाथ से सम्पत्ति चली गई। ईनाम आदि रद्द कर दिये गये। मन्दिर सरकार के नीचे आ गये। शराब पीना, मादकद्रव्य, जुआ, रईसों की दावतें, विनोद आदि निषिद्ध कर दिये गये। किसी के पास न सोना था न चान्दी ही। कर बढ़ा दिये गये।

इस परिस्थिति में व्यापारियों को भी अल्लाउद्दीन ने नजायज़ फ़ायदा नहीं उठाने दिये। इसके लिए उसने उन पर जरूरी पाबन्दियाँ लगायीं। वस्तुओं की कीमतें सरकार द्वारा निश्चित की गईं। क्रय विक्रय का खुले तौर पर किया जाना आवश्यक था, यदि कोई किसी चीज़ को धोखे से कम तोलता, तो वह जितना कम तोलता उतना माँस उसके शरीर से काट लिया जाता। यह राजाज्ञा थी।

१३१२ अल्लाउद्दीन का शासन ज़ोर शोर से चलता रहा। फिर उसके बुरे दिन आये। वह मलिक काफ़ूर के हाथ में कठपुतली बन गया। वह हिंजड़ा ही उसका सेनापति और मन्त्री था।

देश में विप्लव प्रारम्भ हुए। आखिर २ जनवरी, १३१६ में अल्लाउद्दीन मर गया। दिल्ली में जामा मस्जिद के सामने अल्लाउद्दीन को दफ़ना गया और वहाँ उसकी गोरी बनाई गई।

खलासी की सूझ

बर्मा देश में नावों का एक मालिक था। वह बड़ा चालाक था। उसकी नावें ऐरावती नदी के ऊपर नीचे, आया जाया करतीं। वह हर यात्रा के लिए, खलासियों को लेता और रास्ते पर, उनके भोजन आदि का प्रबन्ध किया करता और यात्रा के खतम होने पर उनकी मजदूरी तय किया करता था। यात्रा के खतम होने से एक दिन पहिले कोई चाल चलकर, जो कुछ उनको देना होता था, उसे मार लेता था।

एक यात्रा के लिए जो खलासी लगाये गये थे, उन में एक पहाड़ी ईलाके का भी था। वह देखने में बिल्कुल नादान दीख पड़ता था। वह और खलासियों से मिलता जुलता न था। इसलिए उन्होंने उसे नहीं बताया कि मालिक धोखेबाज था।

नाव बर्मा के दक्षिणी प्रदेश में आयी जब वे वापिस जा रही थीं, तो नावों के मालिक ने पहाड़ी आदमी से कहा— "मेरी बात सुनकर एक मुरगी का जोड़ा खरीद लो। वे दक्षिण में सस्ती हैं और उत्तर में मेंहँगी। यदि यहाँ खरीद कर वहाँ बेचो, तो ढेर-सा फायदा होगा।"

पहाड़ी को यह बात जँची उसने एक जोड़ी खरीदी और रोज रसोई से कुछ चावल लाकर उनको खिलाया करता। यात्रा जिस दिन खतम होती थी, उस दिन, पहाड़ी को बुलाकर उसने कहा—"देखो भाई, यात्रा में तुम्हें खाना देना, तो मेरी जिम्मेवारी है, पर तुम्हारी मुरगी की जोड़ी को खाना देना मेरी जिम्मेवारी नहीं है। इसलिए जो कुछ तुम्हारी मुरगियों ने खाया

है, उसको भी मैंने हिसाब में लिख दिया है। जो कुछ मजदूरी तुम्हें मुझे देनी थी, वह उस हिसाब को पूरा कर देती है। इसलिए अब मुझे, तुम्हें कुछ देने की ज़रूरत नहीं है।"

पहाड़ी ने कुछ भी न कहा—"यह ठीक ही तो है।"

बाकी खलासी उसे देखकर हँसे। "ये पहाड़ी निरे मूर्ख हैं।" उन्होंने मजाक किया।

पहाड़ी घर गया। उसने एक ही तरह के दो विचित्र चाकू तैयार करवाये। फिर उसने नावों के मालिक के पास आकर कहा—"इस बार भी मुझे काम दीजिये।"

यह सोच कि उसको मजदूरी फिर मार सकूँगा। मालिक ने उसको काम दे दिया। फिर नावें निकलीं और खलासियों ने पहाड़ी की मजाक उड़ायी। "क्यों इस बार भी मुरगियों की जोड़ी खरीदोगे!"

"नहीं मालूम! इस बार सफर शायद फायदेमन्द हो। क्योंकि मेरे पिता ने यह महिमावाला चाकू दिया है।" कहकर, पहाड़ी ने दो चाकुओं में से एक चाकू दिखाया। दूसरे चाकू को उसने बड़ी हिफाजत से छुपाये रखा।

जब तक वे दक्षिणी बर्मा में न पहुँच गये, खलासी, उसको चिढ़ाते ही रहे। उसने उनकी बातों की परवाह न की।

"यह महिमावाला चाकू किस काम का है!" उन्होंने पूछा।

"यह तो मैं नहीं जानता। पर यह महिमावाला चाकू अवश्य है।" पहाड़ी कहा करता।

दक्षिणी बर्मा से वे फिर वापिसी रास्ते पर उत्तर की ओर चले। खलासी, पहाड़ी को चाकू के बारे में चिढ़ाते-चिढ़ाते थक

गये। पर एक दिन दुपहर को जब एक गाँव के घाट में नाव लगी हुई थी तो पहाड़ी, किश्ती के किनारे पर घिस-घिस कर चाकू तेज़ करने लगा। यह देख, खलासी फिर उसका मजाक करने लगे। पहाड़ी, मुड़कर उनसे कुछ कहने को था, कि चाकू फिसलकर पानी में गिर गया।

"तुरत उतरकर अपना चाकू ले आओ।" खलासियों ने कहा।

"जल्दी क्या है। वह कहाँ जायेगा! कोई एक और चाकू दो।" पहाड़ी ने किसी और के चाकू से, किश्ती के छोर को काटकर निशान बनाया। "इस निशाने के नीचे, कभी भी उतरकर चाकू निकाला जा सकता है।" उसने कहा।

"अरे पगले! थोड़ी देर में, नाव जानेवाली है। तुम क्या यह सोच रहे हो कि तुम्हारा चाकू भी किश्तियों के साथ साथ चलता आयेगा!" खलासियों ने कहा।

"यह तो मैं नहीं जानता। पर, इतना जानता हूँ कि चाकू से जहाँ निशान लगाया है वहाँ से चाकू कहाँ जायेगा!" उसने कहा।

पगले से क्या बात की जाये, यह सोचकर, औरों ने उसे छेड़ना छोड़ दिया। परन्तु नावों के मालिक ने उसे न छोड़ा। उसे उसकी मजदूरी हड़पने का अच्छा बहाना मिल गया। उसने पहाड़ी से कहा। "यह देखो, छोटी-सी बाजी लगाओगे! कल हमारी किश्तियाँ एक और गाँव के पास रुकेंगी। अगर वहाँ तुमने किश्ती के नीचे से चाकू निकाला तो मैं अपनी सारी किश्तियाँ तुम्हें दे दूँगा। यदि न निकाल सके, तो तुम अपनी सारी मजदूरी दे दो। ठीक है न!"

पहाड़ी ने चेहरा इधर उधर करके कहा—"इसमें कोई धोखा है। जहाँ चाकू गिरा है वहाँ मैंने निशान कर ही दिया है। इसलिए जरूर मैं पानी में से चाकू ज़रूर निकाल सकूँगा। यह तुम भी जानते हो। क्यों बाजी लगाते हो!"

"मैं यों ही शौक के लिए बाजी लगा रहा हूँ। मुझे बाजी लगाने का शौक है।" किश्तियों के मालिक ने कहा।

"अच्छा, जैसी आपकी मर्जी। मैं बाजी के लिए तैयार हूँ।" पहाड़ी ने कहा।

अगले दिन एक और गाँव में किश्तियाँ रुकीं। किश्तियों के मालिक ने खलासी को बुलाकर कहा—"अब पानी में कूद कर चाकू निकालो।"

पहाड़ी ने जहाँ निशान लगाया था, ठीक उसके नीचे पानी में कूदा। वह पानी में डूबकर अपने कपड़ों में छुपाये हुए चाकू को निकालकर बाहर निकला। चाकू को घुमाते हुए उसने कहा—"यह लो देखो चाकू।"

"अरे पहाड़ी, तुम्हें हमने अनजाने छेड़ा। माफ करो। सचमुच तुम्हारा महिमावाला चाकू है।" बाकी खलासियों ने कहा।

किश्तियों का मालिक गुस्से में गरमाया—"धोखा, धोखा" चिल्लाया।

"वह तो मैं नहीं जानता। मैंने कहा था कि मेरा चाकू महिमावाला है। यह तो मैंने तुम्हें पहिले ही बताया था।" उसने कहा।

किश्तियों का मालिक काँप उठा। पर बाजी के मुताबिक उसको अपनी सारी किश्तियाँ पहाड़ी को देनी पड़ीं।

[२६]

[जयमल्ल, बोडाली और श्वानकर्णा गिरोहों में समझौता करने के प्रयत्न में सफल नहीं हुआ। बोडाली ने बताया कि श्वानकर्णा गिरोह के मूल पुरुष की पत्थर की गदा अंगारे उगलनेवाले शेर की गुफा में थी। उस गदा को लाने के लिए केशव और उसके साथी झील पार करके गुफा के पास गये और उन्होंने अन्दर झाँककर देखा। बाद में—]

गुफा के अन्दर अधिक अन्धेरा न था। कहीं से उसमें रोशनी आ रही थी। उसमें सब से पहिले केशव ने झुककर देखा कि कहीं अंगारें बिखरे पड़े हों, परन्तु शेर कहीं नहीं दिखाई दिया।

"यदि जो कुछ गुहावासी कह रहे हैं वह ठीक है, तो आग उगलनेवाला शेर हमारे बाणों की पहुँच से दूर है।" कहते हुए केशव ने अपने साथियों की ओर देखा।

इस बीच, जयमल्ल और जंगली गोमान्ग ने भी गुफा में अंगारे देखे।

"हमें शेर को बाहर लाना होगा। यदि यह किया गया, तो उसे मारना आसान है। यही नहीं, हमारा गुफा में जाना उतना ठीक नहीं है।" जयमल्ल ने कहा।

"शेर हमसे डरकर भाग गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।" जंगली गोमान्ना ने कहा।

"अब हमें गुफ़ा में उसका पीछा करके शिकार करना चाहिए और क्या रास्ता है?" जयमल्ल, से केशव ने पूछा।

जयमल्ल ने गुफ़ा में दो कदम आगे रखते हुए कहा—"यह जन्तु, उतना भयंकर नहीं है, जितना कि इन गुफावासियों ने बताया था। परन्तु इसमें एक बात है, जो और शेरों में नहीं है और वह यह कि नाक से या मुख से इसके अंगारे टपकते हैं। यह देख गुहावासी इतना डरते हैं। फिर भी सम्भलकर चलो। यदि हम तीनों के बाण में से एक भी लगा, तो वह मर कर ही रहेगा। क्यों गोमान्ना? पर जल्दबाजी न करना।"

"इस विषय के बारे में मैं खूब जानता हूँ। मुझे कोई सन्देह नहीं है।" जंगली गोमान्ना ने कहा।

तीनों गुफ़ा में आगे बढ़ते गये। फिर उन्होंने देखा कि गुफ़ा दो तीन भागों में फट गई थी। सब जगह रोशनी थी। पर कहीं शेर का पता न था।

जयमल्ल अभी यह कह रहा था कि जंगली गोमान्ना ने गुफ़ा के पास पड़े एक बड़े पत्थर को उठाकर जोर से गुफ़ा में फेंका। "ओहो....हो...." वह जोर से चिल्लाया भी। उसकी आवाज गुफ़ा में गूंजी। तुरत अंगारे चमके। कहीं किसी के हिलने की आवाज आयी।

केशव ने झट बाण लगाकर सीधे गुफ़ा में छोड़ते हुए कहा—"शेर हम पर हमला करने आ रहा है।"

परन्तु फिर गुफ़ा में कोई आहट न हुई। अंगारों की रोशनी भी जाती रही।

"हम फिर गुफ़ाओं में आ पड़े हैं। कौन-सा रास्ता कहाँ जाता है, कह नहीं सकते। शेर, इनमें से किस रास्ते पर गया है?" केशव ने इधर उधर कदम रखते हुए पूछा।

जंगली गोमान्ना घुटने टेककर जहाँ रास्ता फटता था बड़े ध्यान से देखने लगा। "शेर यह देखो....इस तरफ़ गया है। उसके पंजो के चिन्ह दिखाई दे रहे हैं। अब उठो। चलो...." उसने अचरज करते हुए कहा।

जयमल्ल ने उसकी बाँह पकड़कर कहा—"गोमान्ना जल्दी न करो। सम्भव है। वह इस रास्ते पर गया हो। पर वह यों जाकर किसी और रास्ते से पीछे आकर, हम पर हमला भी कर सकता है। यह भी सोचा कि नहीं?"

जयमल्ल के कहने पर गोमान्ना ने चकित होकर कहा—"हाँ, जयमल्ल जो तुम कह रहे हो, वह ठीक है। हममें से एक का, पीछे की ओर देखते हुए सम्भलकर चलना जरूरी है। उस स्थिति में शेर हम पर अचानक हमला नहीं कर सकता।"

जयमल्ल और गोमान्ना आगे आगे बढ़ रहे थे और पीछे की ओर देखता, केशव उनके पीछे पीछे। इस प्रकार कुछ दूर जाने के बाद गोमान्ना ने धीमे से कहा—"यह देखो, मनुष्य का कंकाल। शायद यह बीडाली गिरोह के उस लड़के का होगा। वह ही धानकर्णी की गदा चुराकर यहाँ लाया था।"

जयमल्ल ने थोड़ी दूर पर पड़े कंकाल को उठाकर ध्यान से देखा, हो सकता है कि यह कंकाल उसी का हो, तो गदा भी यहीं कहीं होगी।

तीनों, वहाँ गदा खोजने लगे। केशव ने ज़ोर से हँसते हुए एक कोने में, चार फीट लम्बे पत्थर के एक टुकड़े को, जिसका एक सिरा गोल गोल और काँटों वाला था, ऊपर उठाया। "क्या यही महिमावाली श्वानकर्णी के मूलपुरुषों की गदा है?"

जयमल ने उस गदा की परीक्षा करके कहा—"इसमें तो कोई शक नहीं, कि यह पत्थर की गदा है। इसमें महिमा है कि नहीं, यह तो वे गुफ़ावासी ही जानते हैं। हाँ, तो हम जिस काम पर आये थे। वह हो गया है। चलो, बाहर चलें।"

"तो शेर के बारे में क्या किया जाय?" केशव ने पूछा।

"हाँ, हमने उसे मारने का वादा किया है। बिना मारे हम कैसे जायें!" जंगली गोमान्ना ने कहा।

जयमल ने मुस्कराते हुए पत्थर की गदा को जंगली गोमान्ना को देते हुए कहा—"हमने किसी को वचन नहीं दिया है कि हम शेर को मार देंगे। वह काम पूरा हो गया है। शेर के बारे में क्यों सोचा जाये? हम यह भी नहीं जानते कि वह कितना भयंकर पशु है। व्यर्थ दुस्साहस करना ठीक नहीं है।" कहता कहता वह केशव की ओर मुड़ा।

जयमल की बात पर केशव कुछ कहने ही वाला था कि जंगली गोमान्ना ने उछलकर कहा—"अंगारे उगलनेवाला शेर। बाण चढ़ाओ।" उसने पत्थर की गदा ज़ोर से उठाई।

शेर मोड़ के परे से ज़ोर से गरजता, आगे कूदा। जयमल और केशव अभी बाण चढ़ा भी न पाये थे कि गोमान्ना ने
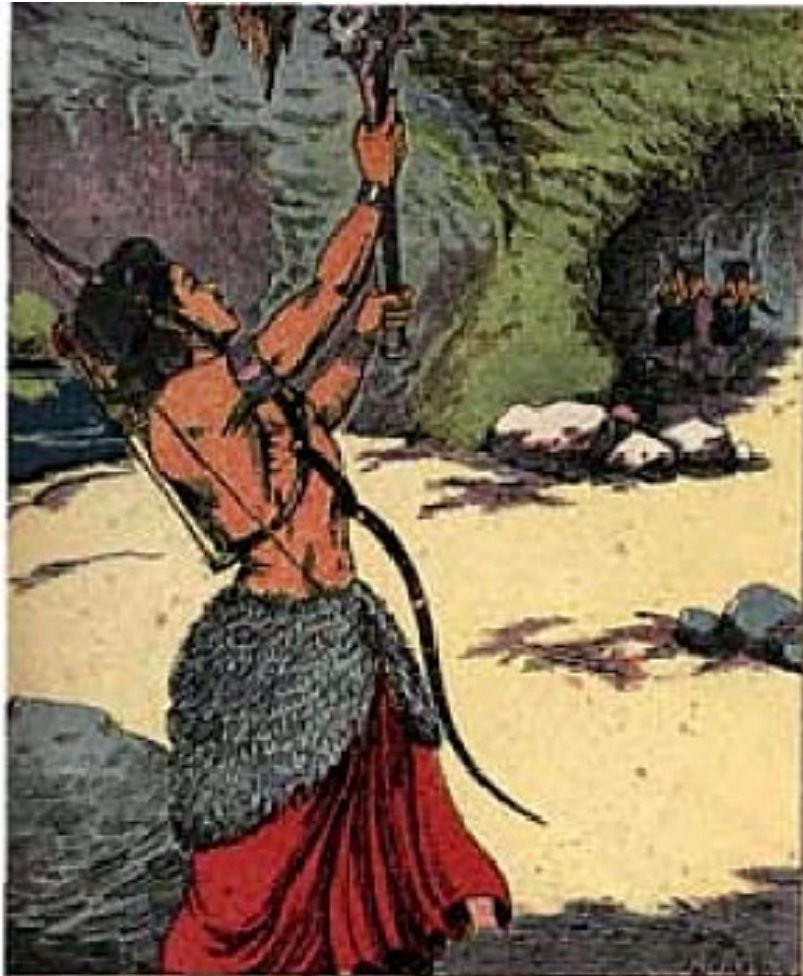
अपने हाथ की गदा से उसके सिर पर चोट मारी। चोट खाते ही शेर झट पीछे दौड़ने लगा। केशव और जयमल्ल के बाण उसको नहीं लगे।

"न मालूम किसने इसको शेर का नाम दिया है। यह शेर नहीं है। हम लोग इसको सिंहालीक कहते हैं। हमारे पहाड़ों में भी ये आते जाते रहते हैं। उसकी नाक से निकलनेवाले अंगारों में रोशनी तो होती है, पर गरमी नहीं होती।" जंगली गोमान्ना ने हाथ हिला हिला कर कहा।

"उसका गला और मुख देखकर कोई नहीं विश्वास करेगा कि यह शेर की जाति का है। फिर वह डरपोक भी है। परन्तु अब इस वर्णन की जरूरत भी क्या है। क्योंकि दिखाई पड़ा है इसलिए देखें यह क्या करता है।" कहता जयमल्ल सामने भागा। केशव और गोमान्ना भी उसके पीछे गये।

शेर गुफ़ा में थोड़ी दूर भागा। फिर मुड़ा। जयमल्ल ने मोड़ पर आकर झाँककर देखा। फिर उसने हँसते हुए कहा—"मुझे डर था कि हमारे लिए यह यहीं बैठा देख रहा होगा। परन्तु यह तो भाग निकला। अब क्या किया जाय?"

केशव और जंगली गोमान्ना जयमल्ल के पास आये और सामने की गुफ़ा की ओर उन्होंने देखा।

गोमान्ना ने पत्थर की गदा को इधर उधर घुमाते हुए कहा—"इसमें कोई अद्भुत शक्ति है। यह निस्सन्देह तथ्य है....देखा, एक ही चोट से वह शेर किस तरह घबराकर चला गया?"

"उसका चला जाना भी शायद अच्छा है।" जयमल्ल ने कहा।

"इतनी मेहनत को फ़ाल्तू क्यों किया जाये ! उसको मारकर उसका चमड़ा क्यों न लिया जाय !" केशव ने पूछा।

तीनों गुफ़ा में चलने लगे। पर कहीं शेर का पता न था। उन्होंने सोचा कि वह गुफ़ा के मार्ग में ही कहीं छुपा हुआ होगा। पर उसको इस सुरंग में, जहाँ इतने सारे रास्ते हैं कैसे मारा जाय !

जयमल पीछे की ओर मुड़ा। फिर यकायक उसने रुककर कहा—"वापिस, झील के पास जाने के लिए क्या तुम रास्ता जानते हो ? जैसे पहिले गुफ़ा में रास्ता भूल गये थे, कहीं ऐसा न हो कि इस बार भी भूल जायें !"

इस प्रश्न पर उनको अपनी गल्ती याद हो आयी। शेर को मारने की फ़िक्र में वे रास्ते पर बिना निशान लगाये जल्दी जल्दी आगे बढ़ गये। अब वे यह निर्धारित न कर पा रहे थे कि किस रास्ते से वे फिर वापिस झील जा सकेंगे।

"जल्दी में किसी रास्ते पर जाकर, बाद में पछताना हमारे लिए अच्छा नहीं है। पहिले यह जानना अच्छा है कि हम झील से कितनी दूर हैं।" जयमल ने कहा।

"यह कैसे मालूम किया जाय ?" केशव ने कहा।

जयमल अभी जवाब देने ही वाला था कि जंगली गोमान्ना वहाँ रखे ऊबड़ खाबड़ पत्थरों पर चढ़ गया। एक छेद में से सिर बाहर करके वह चिल्लाया। "हाँ, माँ देवी" कहकर वह सिर नीचा करके कूद पड़ा।

"क्यों तुम्हें इतना आश्चर्य हुआ ! क्या दिखाई दिया ?" जयमल ने गोमान्ना से पूछा।

गोमान्गा ने नाक पर अंगुली रखकर चुप रहने का इशारा करके कहा—"हम फिर खतरे में आ पड़े हैं। गुफ़ा के रास्ते हम उस प्रदेश में तो आ ही गये हैं, जहाँ पंखवाले मनुष्य रहते हैं। साथ ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक के भी शिकार हो गये हैं।"

ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक का नाम सुनते ही, केशव और जयमल्ल के आश्चर्य की सीमा न रही।

जब उन्होंने भी छेद में से बाहर देखना चाहा, तो गोमान्गा ने उनको सावधान करते हुए कहा—"तुम कुछ ऐसा न करना कि कहीं वे जान जायें कि हम कहाँ हैं। पंखवाले मनुष्य ब्रह्मदण्डी के सामने व्यायाम प्रदर्शन करते मालूम होते हैं।"

केशव और जयमल्ल ने चुपचाप छेद में से बाहर देखा। सामने एक बड़ा मैदान था। बड़े बड़े पेड़ थे। उन पर से कई पंखवाले मनुष्य पक्षियों की तरह कूद रहे थे। वह एक ऊँचे पत्थर के आसन पर ब्रह्मदण्डी बैठा हुआ था और हाथ से मन्त्रदण्ड को हिला रहा था।

"इस बार इसको जीते जी नहीं जाने देंगे।" केशव ने क्रुद्ध होकर कहा।

जयमल्ल सिर हिलाता कुछ कहने को था कि पंखवाले मनुष्य यकायक शोर करके तितर बितर होकर भाग गये।

ब्रह्मदण्डी पत्थर पर खड़े होकर चाकू के डंडे को घुमाता "मैं हूँ....घट, घट, कालभैरव" चिल्लाने लगा। आग उगलनेवाला शेर पंखवाले मनुष्यों के पीछे भाग रहा था।

[अभी है]
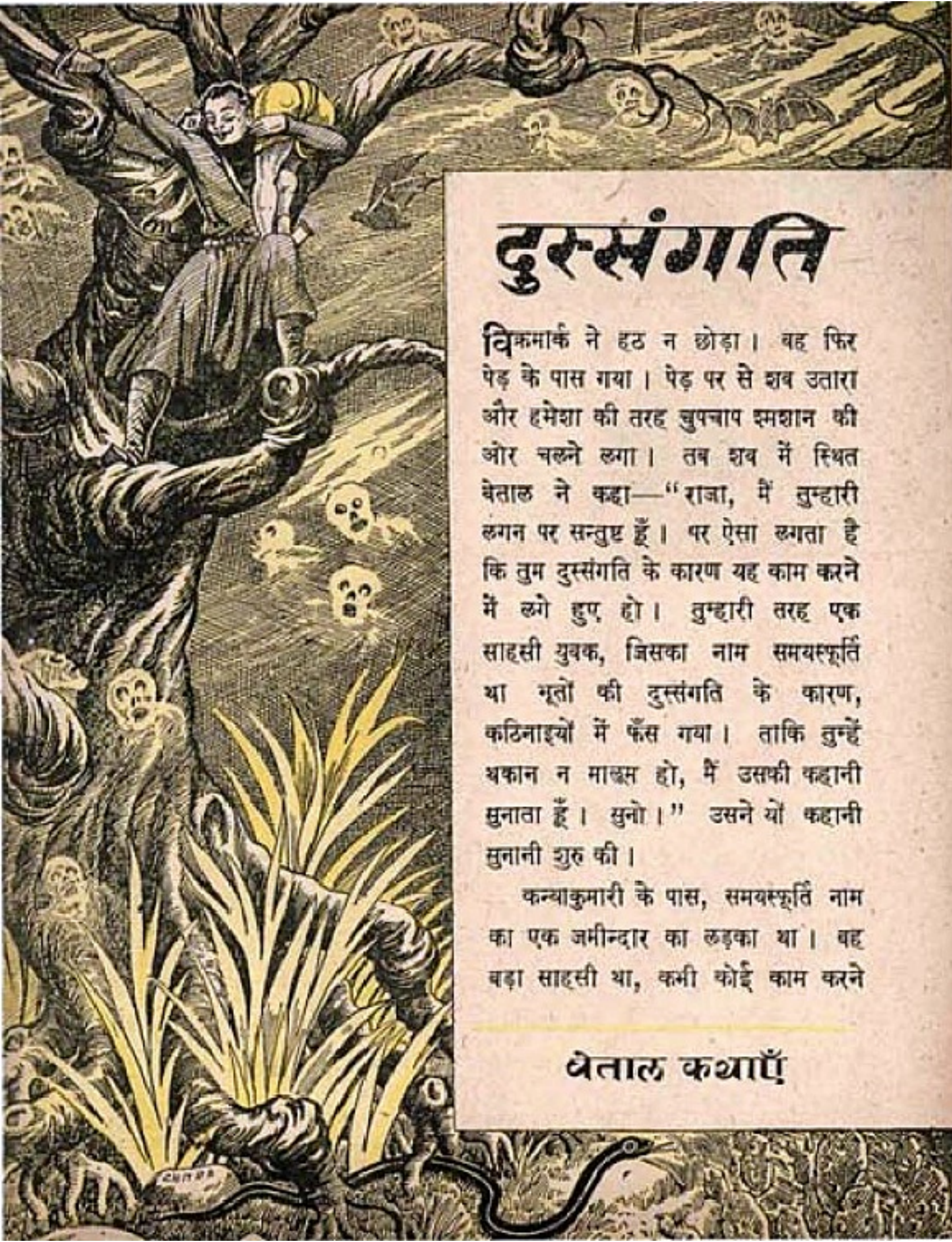
दुस्संगति

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारा और हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, मैं तुम्हारी लगन पर सन्तुष्ट हूँ। पर ऐसा लगता है कि तुम दुस्संगति के कारण यह काम करने में लगे हुए हो। तुम्हारी तरह एक साहसी युवक, जिसका नाम समयस्फूर्ति था भूतों की दुस्संगति के कारण, कठिनाइयों में फँस गया। ताकि तुम्हें थकान न माऌम हो, मैं उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

कन्याकुमारी के पास, समयस्फूर्ति नाम का एक जमीन्दार का लड़का था। वह बड़ा साहसी था, कभी कोई काम करने

की सोचता, तो आगे पीछे न देखता। किसी के कहने पर भी हठ न छोड़ता बड़ा ढीट था।

एक दिन समयस्फूर्ति और उसके पिता में वाद विवाद हुआ। उसे पिता पर बड़ा गुस्सा आया। इसलिए उसने तभी घर छोड़कर कहीं चले जाने की ठानी।

समुद्र के किनारे के एक टीले पर बैठकर उसने सोचा कि उसे क्या करना था। जहाँ तक नजर जाती थी, वहाँ तक कोई न था। आकाश में चन्द्रमा मेघों के बीच में से भागा जा रहा था। समयस्फूर्ति ने सोचा कि क्या अच्छा हो कि वह भी समुद्र पार किसी देश में चला जाये।

वह सोच ही रहा था कि यह कैसे सम्भव हो सकेगा कि दूरी पर उसे कुछ आहट सुनाई दी। जल्दी ही जमीन की तरफ से भूत भागे भागे आये, वह जिस टीले पर बैठा था, उसके पास से, समुद्र के पास के एक बड़े टीले पर गये। समयस्फूर्ति ने, न आगे सोचा, न पीछे, उन भूतों के पीछे भागा।

भूत सब एक जगह जमा हुए। वे चिल्लाये—"मेरा घोड़ा, मेरी जीन" और समयस्फूर्ति ने देखा कि उनके सामने घोड़े और जीन प्रत्यक्ष भी हो गये थे।

इसलिए वह भी चिल्लाया। "मेरा घोड़ा, मेरी जीन" तुरत उसके सामने भी एक घोड़ा, जीन के साथ दिखाई दिया। उस पर सवार होकर जब उसने चारों ओर देखा, तो वे सब के सब भूत भी घोड़ों पर सवार थे।

समयस्फूर्ति के पास के घोड़े पर सवार एक बूढ़े भूत ने पूछा—"क्यों, समयस्फूर्ति, तुम भी हमारे साथ आ रहे हो!"

"हाँ, जरूर—" समयस्फूर्ति ने कहा।

"तो चलो—" भूत ने कहा। घोड़े समुद्र के किनारे किनारे भागे। ज्यों ज्यों एक एक घोड़ा, पानी के पास आता, तो उस पर सवार भूत कहता—"उस पार" और घोड़ा, आकाश में उड़ता।

समयस्फूर्ति ने भी कहा—"उस पार" वह भी घोड़े के साथ हवा में उड़ा।

चुटकी भर में घोड़े उस पार थे।

"समयस्फूर्ति, जानते हो, यह कौन-सा देश है!" बूढ़े भूत ने पूछा।

"मैं नहीं जानता—" समयस्फूर्ति ने कहा।

"यह लंका है। आज रात को लंका के राजा के लड़की का विवाह हो रहा है। उस लड़की-सी सुन्दर, तीनों लोकों में कहीं नहीं है। हम उसे उठा लाने के लिए अब जा रहे हैं। तुम्हारा आना अच्छा ही हुआ—क्योंकि आते समय, हम उसको, तुम्हारे घोड़े के पीछे बिठायेंगे। वह तुम्हें पकड़ सकेगी। हम चूँकि मनुष्य नहीं हैं, इसलिए वह हमें पकड़ न पायेगी। यदि वह हमारे घोड़ों पर सवार की गई, तो वह गिर पड़ेगी। क्यों, तुम यह करोगे! जैसा हम कहेंगे, वैसा करोगे!" बूढ़े भूत ने पूछा।

समयस्फूर्ति ने न आगे सोचा न पीछे, कहा—"क्यों नहीं मानूँगा! जो तुम कहोगे, करूँगा।"

सब घोड़ों पर से उतरे एक भूत ने कोई मन्त्र पढ़ा। अगले क्षण समयस्फूर्ति के साथ सब भूत, एक विशाल राजमहल में थे।

राजमहल रोशनी के कारण चमचमा रहा था। कीमती पोशाकें पहिने

चमचमाते गहने पहिने, जगह जगह के राजकुमार और राजकुमारियाँ और स्त्रियाँ भोजन कर रही थीं। समयस्फूर्ति ने इतने वैभव की स्वप्न में भी कल्पना न की थी। यह उसके लिए स्वर्ग-सा था। वहाँ का संगीत गन्धर्व संगीत-सा लगा। नृत्य, अप्सराओं का नृत्य-सा लगा।

लंका के राजा के परिवार में यह पहिला समारोह था। इसलिए बहुत-सा धन खर्च करके, इस विवाह की व्यवस्था कर रहा था। यही नहीं, राजा के इस लड़की के सिवाय कोई और सन्तान न थी। उसका पड़ोस के राजा के साथ विवाह किया जा रहा था।

किसी ने वहाँ न भूतों को देखा न समयस्फूर्ति को ही। इसलिए उनके आने से उनके मनोरंजन में किसी प्रकार की बाधा न पहुँची।

"इसमें दुल्हिन कौन है?" समयस्फूर्ति ने बूढ़े भूत से पूछा।

"वह देखो। विवाह का तिलक लगाये दुल्हिन वेष में नहीं दिखाई देती है!" भूत ने पूछा।
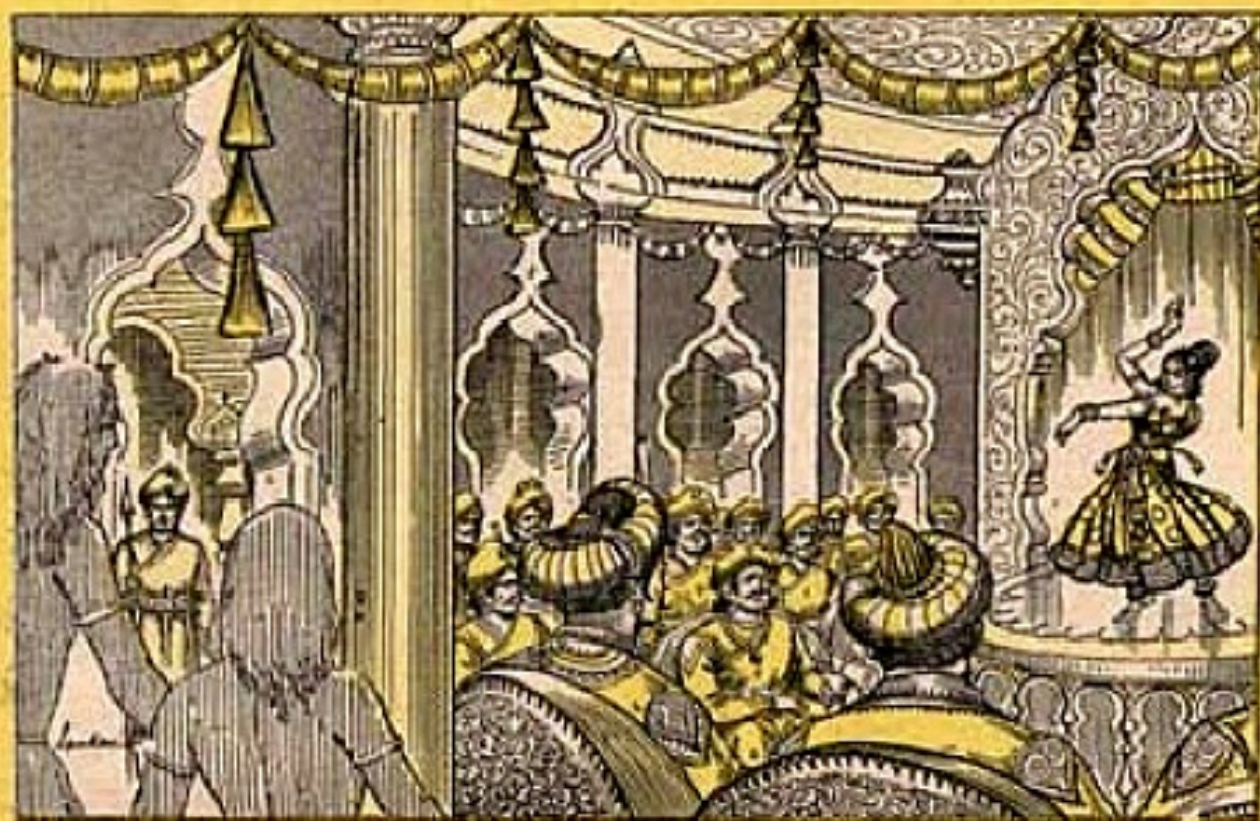
भूतों ने जब दिखाया, तो समयस्फूर्ति स्तब्ध-सा रह गया।

वधू बहुत सुन्दर थी, उसने कभी कल्पना भी न की थी, कि संसार में उतनी सुन्दर कोई होगी। जो साड़ी उसने पहिन रखी थी उस पर ढेर-सी जरी थी। उसकी अंगूठी का हीरा, तारे की तरह चमक रहा था। उसको देखते ही समयस्फूर्ति की आँखें चौंधिया गईं। पर जब उसने उसे ध्यान से देखा, तो उसको लगा कि उसकी आँखों में आँसू थे।

"जब सब इसे देख खुश हैं, तो दुल्हिन की आँखों में आँसू क्यों हैं!" समयस्फूर्ति ने पूछा।

"क्यों! क्योंकि वह वर को पसन्द नहीं करती है। यह सम्बन्ध तीन साल पहिले ही पिता ने निश्चित कर दिया था। तब उसकी उम्र पन्द्रह वर्ष की थी। उसने पिता से यह न कहना चाहा कि वह विवाह न चाहती थी, इसलिए उसने कहा कि उतनी छोटी उम्र में मैं शादी नहीं करूँगी। अगले साल और उसके बाद के साल में भी उसने यही कहकर विवाह

टाल दिया। इस वर्ष राजा जैसे तैसे उसका विवाह कर रहा है। राजकुमारी मन ही मन इस पर झिझक रही थी। हम उसके कष्ट दूर कर रहे हैं। हम ऐसा करेंगे कि उसका विवाह किसी राजकुमार से न हो।"

राजकुमारी की परिस्थिति देखकर समयस्फूर्ति का दिल पिघल उठा। वह होने को तो नापसन्द पति से छुड़ाई जा रही थी, पर वह भूतों के हाथ भी पड़ रही थी। बिचारी। अच्छा होता यदि मैं इन भूतों के साथ न आता। उसको अपने देश से, अपने परिवार से दूर करने में समयस्फूर्ति का भी हाथ होगा। यह उसे बिल्कुल पसन्द न था।

उसने कुछ कहा तो नहीं। पर मन ही मन सोचने लगा। "जैसे भी हो, इसकी रक्षा की गई, तो अच्छा होगा। अगर उसकी रक्षा करते करते, मेरे प्राण भी चले गये, तो कोई बात नहीं। पर मैं क्या कर सकता हूँ!"

सहभोज समाप्त हुआ। दुल्हिन और दुल्हा विवाह वेदी की ओर जा रहे थे। उनके साथ राजा रानी भी थे।

जब वे भूतों के पास से गुज़र रहे थे, तो एक भूत ने अपना पैर आगे रखा। दुल्हिन गिर गई। तुरत एक और भूत ने उसके मुँह पर कुछ ढ़का। उसके बाद, किसी ने वहाँ दुल्हिन को नहीं देखा।

राजमहल एक क्षण में कोलाहल से गूँजने लगा। "दुल्हिन कहाँ है! कहीं नहीं दिखाई दे रही है। अभी जो गिरी थी वह इतनी जल्दी कहाँ कैसे गायब हो गई!" शोर शराबा होने लगा। इस बीच भूत दुल्हिन को उठाकर घोड़ों के पास ले गये।

भूतों के साथ, समयस्फूर्ति भी चिल्लाया, "मेरा घोड़ा, मेरी जीन" उसका घोड़ा सामने आकर खड़ा हुआ।

"तुरत सवार हो, समयस्फूर्ति! उसे तुम पीछे सवार कर लो।" बूढ़े भूत ने कहा।

समयस्फूर्ति ने राजकुमारी को घोड़े पर सवार किया। वह उसके सामने घोड़े पर सवार हो गया। घोड़े फिर समुद्र की ओर भागने लगे। "उस पार" कह वे समुद्र पार करके उस जगह पहुँचे, जहाँ से वे निकले थे।

ठीक उसी समय समयस्फूर्ति को एक ख्याल आया। उसने राजकुमारी के साथ घोड़े पर से उतरते ही कहा। "हमारे पास न आओ। हमें मत छुओ। जय हनुमान" वह हनुमान का स्तोत्र पढ़ने लगा।

भूतों ने झट खड़े होकर पूछा—"साथ आने देने का क्या फल यही है? तुम बाद में पछताओगे देखते रहना।" फिर भूत अपने रास्ते चले गये।

"बाप रे बाप, भूतों से तो पिंड छूटा। उसके हाथ पकड़े जाने से तो अच्छा, तुम्हारे लिए मेरे साथ रहना ही है। क्यों?" समयस्फूर्ति ने राजकुमारी से पूछा।

उसने कोई जवाब न दिया।

"मैं अपनी दिक्कत जानता हूं। कुछ भी हो, आज तुम्हें मेरे घर शरण लेनी होगी। तुम मुझे अपना नौकर समझकर, जो कुछ कहना है, कहो।" समयस्फूर्ति ने कहा।

यह कहने पर भी कोई जवाब न दिया।

उसने कुछ कहना तो चाहा, पर मुख से बात न निकली। समयस्फूर्ति जान गया कि भूतों ने उसे गूँगा बना दिया था।
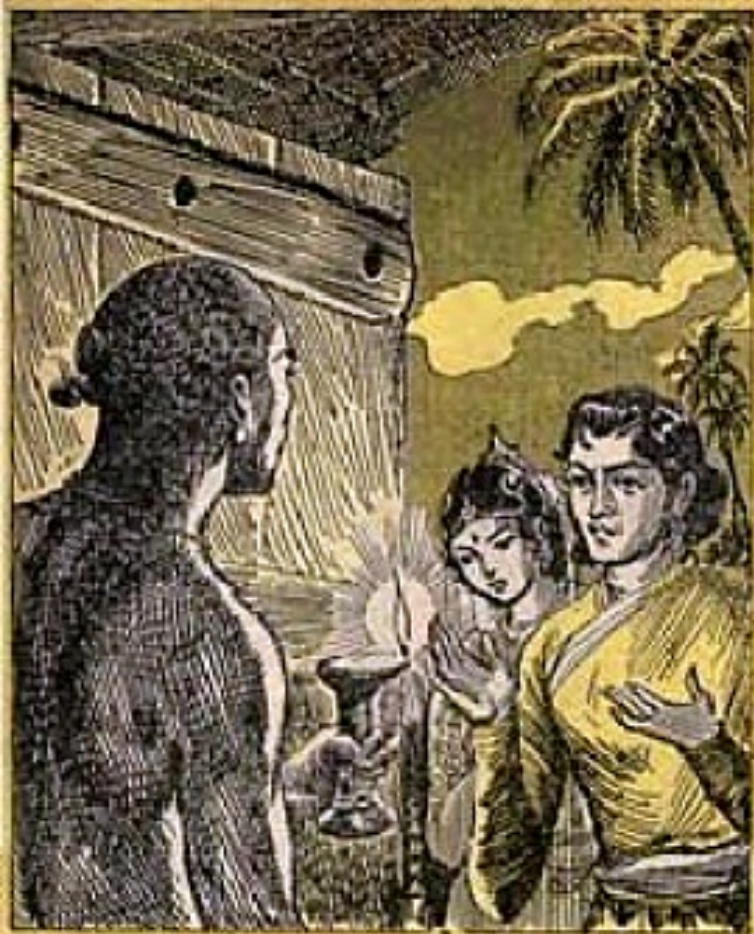
वह तो यूँ ही तरस खा रहा था, उसके आँखों के सामने अन्धेरा-सा छा गया।

घर ले जाने से भी कोई फ़ायदा न था। किसी को विश्वास न होगा कि वह लंका की राजकुमारी थी। वह रात को भूतों के साथ लंका गया था, या भूत उसे उठाकर लाये थे।

यही नहीं उसकी स्थिति हास्यास्पद होगी। इसलिए उसे अपने एक परिचित पुजारी के घर पहुँचाने का उसने निश्चय किया। वहाँ उसको छुपाकर रखकर, आराम से सोचूँगा कि क्या करना है।

जब समयस्फूर्ति ने यह राजकुमारी को बताया, तो वह भी इस व्यवस्था के लिए मान गई।

दोनों मिलकर पुजारी के घर गये। बहुत देर तक दरवाज़े खटखटाने के बाद पुजारी ने उठकर किवाड़ खोले।

"समयस्फूर्ति ने जो कुछ हुआ था उसे बताया। फ़िलहाल, तुम इसको अपने घर में रखो और इस बारे में किसी को कुछ न पता लगे।" उसने कहा।

समयस्फूर्ति ने पुजारी की कई बार मदद की थी। इसलिए उसने कहा—"जितने दिन आप चाहें, उतने दिन इसको हमारे घर रखिये। पर कभी न कभी इसको उनके पिता के घर भेजना ही होगा। मुझे और कोई रास्ता नहीं दिखाई देता। बाद में आप जाने और आपका काम जाने।"

"मैं कुछ नहीं समझ पा रहा हूँ। अब इससे अधिक कुछ किया भी नहीं जा सकता।" समयस्फूर्ति ने कहा।

अगले दिन पुजारी ने कहा कि वह उसके भाई की लड़की थी। गूँगी थी। यूँ ही आ गई थी। किसी ने इस बात

पर विश्वास न किया। पर कोई असलियत भी न जान सका। लोग, समयस्फूर्ति का रोज पुजारी के घर जाना और बहुत देर तक वहाँ रहना, देख काना-फूसी भी करने लगे थे।

रोज ब रोज, राजकुमारी के प्रति, समयस्फूर्ति का प्रेम बढ़ता जा रहा था। वह भी उसको चाहने लगी थी, किन्तु वह गूँगी थी। इसलिए परिस्थिति बदली नहीं।

इस तरह महीने बीतते बीतते एक साल हो गया। एक दिन शाम को उसे याद आया, एक साल पहिले, ठीक इसी समय, लंका गया था। आज, हो सकता है कि भूत समुद्र के तट पर आये हों। उनसे जैसे तैसे यह जाना जा सकता है कि राजकुमारी का गूँगापन कैसे जा सकेगा।

इस आशा में वह रात को टीले के पास गया। वहाँ उसने घंटो भूतों का इन्तजार किया। वह यह सोच कि वे न आयेंगे, घर जाने को ही था कि उनके आने की आहट सुनाई दी।

भूत अपनी जगह आकर चिल्लाये—"मेरा घोड़ा, मेरी जीन" समयस्फूर्ति भी चिल्लाया—"मेरा घोड़ा, मेरी जीन।"

बूढ़े भूत ने उसके पास आकर पूछा—"क्यों समयस्फूर्ति फिर आये हो! पिछले साल हमें धोखा देने के बाद, फिर घोड़ा और जीन चाहिये। तुम्हारी पत्नी क्या कह रही है!"

"जो गूँगी हो, वह क्या बात कर सकेगी!" एक और भूत ने कहा।

"बस, उसे देखकर तसल्ली करनी पड़ रही है। बातें नहीं कर सकते।" तीसरे भूत ने मजाक किया।

पगला कहीं का। उस लड़की के गूँगेपन को हटाने की दवा उसके घर के सामने ही है। उसके पत्ते तोड़कर, उसे पीसो और उसके रस में पानी मिलाकर उसे पिलाया होता, तो उसका गूँगापन कभी का चला गया होता।" एक और भूत ने कहा।

"अरे हमारा उससे क्या वास्ता है, चलो चलो।" बाकी भूतों ने कहा।

भूतों के घोड़ों पर सवार होकर चले जाने के बाद, समयस्फूर्ति घर चला आया। उसे विश्वास न हुआ कि घर के सामने के पौधों के पत्ते के रस से उसका गूँगापन चला जायेगा। यदि यह सच हो तो, तो भूत यह नहीं बताते।

"वह घर जाकर लेट तो गया। पर उसे नींद न आई। सवेरा होते ही वह अपने घर गया। दरवाजे के पास दीवार से सटा, एक विचित्र पौधा दिखाई दिया। उस पौधे को उसने पहिले कभी न देखा था। उस पर सात टहनियाँ थीं और उन पर सात सात पत्ते थे। यह हो न हो कोई औषधी है।" उसने सोचा।

वह जल्दी जल्दी उस पौधे को उखाड़कर घर के अन्दर ले गया। पत्ते जो तोड़े,

तो डंठलों से दूध-सा रस निकला। जब उसने उस दूध को पानी से मिलाकर उबाला, तो तेल-सा तैयार हो गया। वह उसमें से आधा, यह जानने के लिए कि उसकी तासीर है क्या, पी गया। तुरत उसे नीन्द आ गई।

अगले दिन सवेरे तक वह न उठा। उठने पर ऐसा लगा, जैसे उसका मन निर्मल हो और शरीर में बल आ गया हो। दवा का कोई बुरा असर न हुआ था। तब समयस्फूर्ति जो दवा बच गई थी, उसे लेकर पुजारी के घर गया।

जब वह दो दिन तक न दिखाई दिया, तो पुजारी और राजकुमारी चिन्तित थे कि उसे क्या हो गया था। समयस्फूर्ति ने राजकुमारी से वह कषाय पिलवाया। उसे तुरत नीन्द आ गई।

वह अगले दिन सवेरे ही उठ सकी और मामूली तौर पर बातें करने लगी। जब समयस्फूर्ति ने सुना कि वह भी उसे चाहती थी, तो उसने उससे विवाह करने का निश्चय किया। उसने अपने पिता से जो कुछ हुआ था, बताया। पिता ने खुश होकर, उन दोनों का विवाह बड़े जोर शोर से कर दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। समयस्फूर्ति ने चूँकि भूतों को राजकुमारी को नहीं लेने दिया था, इसलिए उसको गूँगा बना देना स्वाभाविक है। परन्तु अन्त में, उसको उन्होंने औषधी क्यों बताई! क्या भूत अपने किये पर पछता रहे थे! या लंका की राजकुमारी पर उनका मोह कम हो गया था! इन सन्देहों का, जान बूझकर यदि तुमने

उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

तब विक्रमार्क ने कहा—"यह सन्देह अकारण हुआ है। शुरु से ही भूत, राजकुमारी को, समयस्फूर्ति को ही देना चाहते थे। बूढ़ा भूत भूतों का सरदार था। वह शुरु से ही समयस्फूर्ति को चाहता था। भूतों को समयस्फूर्ति का दिखाई देना, राजकुमारी का उसके घोड़े पर सवार किया जाना, आदि यूँहि नहीं हो गया था। बूढ़े भूत ने इतना ही नहीं कहा था, कि वह राजकुमारी को उस के लिए उठाकर ला रहा था। उसने सिर्फ इतना ही कहा था कि किसी राजकुमार को उससे शादी नहीं करने देगा। यह समयस्फूर्ति का प्रेम था कि उसने राजकुमारी की उनसे रक्षा की थी। भूतों ने यदि राजकुमारी को एक साल गूँगा बना दिया था, तो इसमें भी उनकी कोई चाल न थी। समयस्फूर्ति से प्रेम करने के लिए इतने समय की आवश्यकता थी। क्योंकि उन दोनों में भेद अधिक था। वह राजकुमारी थी और वह जमीन्दार का लड़का था। चिकित्सा के लिए औषधी भी भूतों ने दी होगी। अपने दरवाजे के पास ही उस पौधे को समयस्फूर्ति ने कभी न देखा था। इन कारणों से साफ़ है कि भूतों का व्यवहार शुरु से अन्त तक एक ही तरह का था।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य होकर पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

पहेली

भीम के ससुर की जमीन्दारी वसन्त देश में थी। उस देश का युवराज किसी सिलसिले में उस तरफ़ घूमता घामता आया।

उन्होंने पहिले ही खबर भिजवायी कि वे जमीन्दार के घर अतिथि रहेंगे।

युवराज के आतिथ्य के लिए जमीन्दार ने जोर शोर से व्यवस्था की। इस काम पर कई आदमी लगाये गये।

युवराज के भोजन स्नान आदि की जिम्मेवारी महालक्ष्मी की दी गई। युवराज के आते ही उसका स्वागत आदि का काम भीम को सौंपा गया।

भीम से जमीन्दार ने कहा—"युवराज तुम्हारी उम्र का है। तुम्हारी तरह ही है। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। इसलिए मेरे स्वागत देने की अपेक्षा, तुम्हारा स्वागत देना, अधिक उचित है। युवराज भी बड़े खुश होंगे।"

जमीन्दार ने जमाई को दिखाया कि युवराज के आने पर, कैसे नमस्कार किया जाय, किस तरह स्वागत किया जाय और किस प्रकार कुशल प्रश्न पूछा जाये।

इसके बाद, भीम को उचित वस्त्र पहिनाये गये। भीमने रेशमी कुड़ता, रेशमी अंगरखा, सिर पर रेशम की टोपी पहिनी और गले में मोतियों की माला डाली।

भीम इस प्रतीक्षा में था कि कब युवराज आता है। वह आतुरता में, चहलकदमी करने लगा।

चहलकदमी करता करता हाल में भीम यकायक आश्चर्य में रुका। क्योंकि शायद उसको दरवाजे के पास युवराज दिखाई दिये थे।

"अरे ये इतने में आ गये और अन्दर भी चले आये। अब क्या किया जाय!"

भीम इस अचरज में ही था कि सामने से लक्ष्मी आई और युवराज के कन्धे पर हाथ रखकर उसने पूछा—"आप यहाँ खड़े खड़े क्या कर रहे हैं!"

परन्तु महालक्ष्मी का युवराज पर पड़ा हाथ, उसके कन्धे पर पड़ा। भीम तुरत असलियत जान गया। उसने युवराज को नहीं देखा था। बल्कि अपना ही प्रतिबिम्ब देखा था। उसके सामने दरवाजा था ही नहीं। बल्कि शीशे में पीछे के दरवाजे की परिछायी थी।

क्योंकि उसने नये कपड़े पहिने हुए थे, इसलिए वह अपने को ही नहीं पहिचान सका। यही नहीं, वह शीशा वहाँ नहीं रखा जाता था। चूँकि युवराज आ रहा था इसलिए उसे पोंछ पाँछकर किसी

कोने में से निकालकर वहाँ रखा गया था।

भीम महालक्ष्मी के प्रश्न का उत्तर दे ही रहा था और युवराज और उनके आदमियों के आने की आहट सुनाई दी। जो जहाँ था, वहाँ खड़ा हो गया।

युवराज ज्यों ही, घर के सामने घोड़े पर से उतरा, त्यों ही भीम ने आगे बढ़कर, अगवानी की, "आइये, पधारिये। महाराज!" बाकी और लोगों ने भी अपने अपने काम किये। कहीं कोई कमी न हुई।

युवराज बड़ा बातूनी था। अपने को बड़ा अक़्लमन्द समझता था। भीम और उसकी दोस्ती हो गई।

भोजन के बाद, सब हाल में आकर बैठ गये। गाँव के बड़े बड़े लोग भी वहाँ आये। युवराज ने बहुत देर तक मामूली बातों को इस तरह सुनाता रहा जैसे वे बड़ी आश्चर्यजनक बातें हों।

शिष्टाचारवश मुँह खोलकर सब उसको सुनते रहे। जगह जगह पर उन्होंने आश्चर्य का भी अभिनय किया।
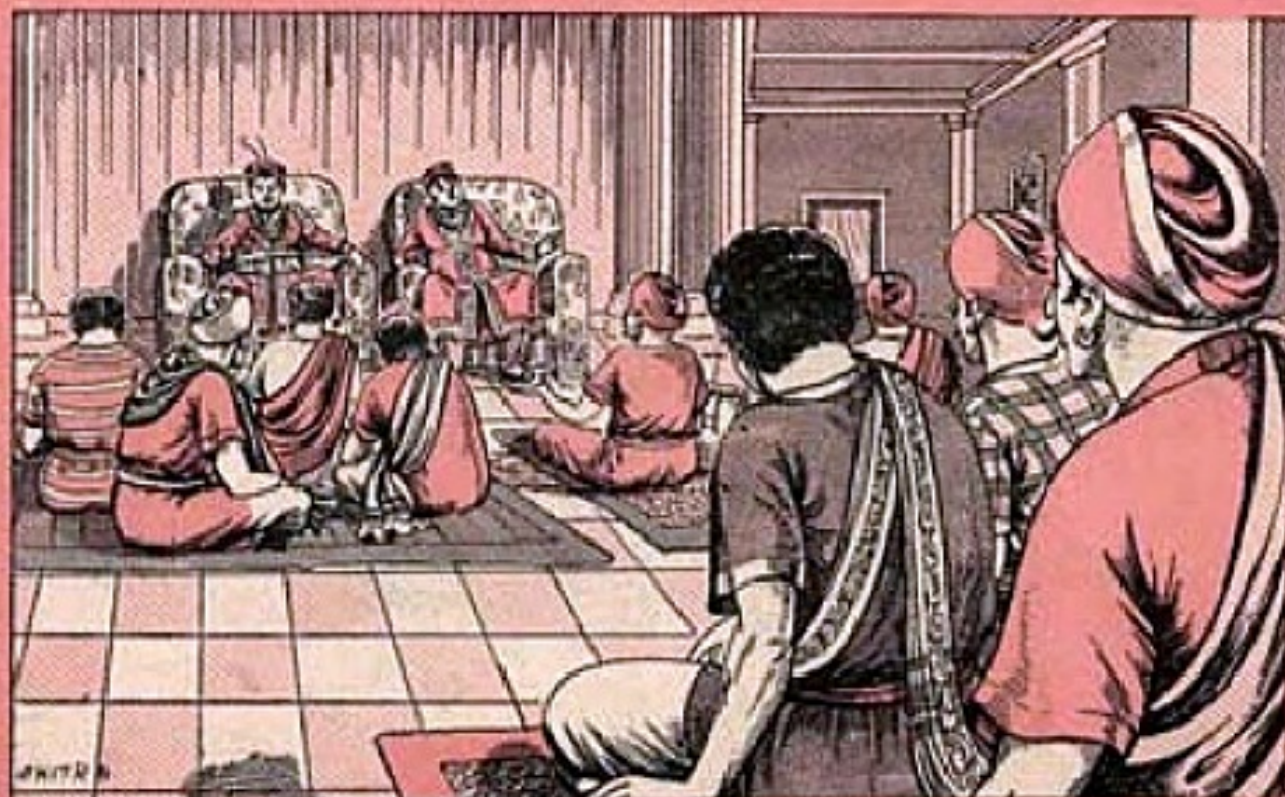
"इन गँवारों की अक़्ल परखी जाय!" सोचकर युवराज पहेलियाँ पूछने लगा।

वे सब पहिले ही जानते थे। इसलिए जब वह कोई पहेली पूछता, तो कोई न कोई उसका जवाब दे देता।

भीम, यह सम्भाषण सुनता, आदमकद शीशे के बारे में ही सोचता रहा। उसके मुख से निकल पड़ा। "एक को दो रतीक है। दायें को बायाँ करती है।"

भीम की बात सुनकर युवराजा ने सोचा कि वह भी कोई पहेली है। "मैंने कभी नहीं सुनी है, क्या है यह!"

भीम की पहेली का जवाब कोई नहीं जानता था। सब उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगे।

भीम को यह जान खुशी हुई, जो बात उसके मुँह से अनायास निकल गई थी, वह पहेली बन गई थी। "एक को दो करता है। दायें को बायाँ करता है।" उसने फिर दोहराया।

"मुझे नहीं मालूम" युवराज ने कहा।

"हमें नहीं मालूम।" औरों ने कहा।

भीम ने हँसते हुए, आदमकद शीशे की ओर इशारा कर के कहा। "शीशा"

सबने तालियाँ बजायीं। युवराज ने भी खुश होकर कहा—"शबाश, मैं यह पहेली औरों को भी सुनाऊँगा। कोई नहीं बता पायेगा।"

वहाँ उपस्थित लोग, भीम से प्रभावित हुए। युवराज ने कई पहेलियाँ पूछीं और बच्चों ने भी उनका जवाब दे दिया। जमीन्दार के जमाई ने एक पहेली पूछी और युवराजा मुँह बाये बैठे रहे। लोग इसके बारे में सालों बातें करते रहे।

राजकुमारी जुलेखा

डमास्कस नगर में अब्दुल्ला नाम का प्रसिद्ध व्यापारी रहा करता था। उसके एक लड़का था, जिसका नाम हसन था। अब्दुल्ला ने अपने लड़कों के लिए अच्छे अच्छे शिक्षकों को नियुक्त किया। उसने खर्च की परवाह न की और उसे अनेक शास्त्र और अनेक भाषायें सिखायीं। अब्दुल्ला को अपने पुत्र के भविष्य के बारे में कोई चिन्ता न थी। वह निश्चिन्त हो, इस संसार से जाने को तैयार था।

मरण शैय्या पर पड़े पड़े उसने हसन को पास बुलाकर कहा—"बेटा, अब मेरा वक्त पास आ गया है। अब तुम्हें कोई नेक सलाह देनेवला न रहेगा। मुझे सन्तोष है कि तुम अच्छी तरह पढ़ लिख गये हो। पर भविष्य में क्या होगा, कोई भी नहीं कह सकता। इसलिए मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। जब कभी, बदकिस्मती से वे दिन आयें, जब तुम जिन्दगी में अंधेरा ही अंधेरा देखो, तो अपने बाग में जाना और वहाँ, एक सूखे पेड़ से लटक कर फाँसी लगा लेना। यह मेरा आदेश है। ऐसा करने से तुम्हें मुक्ति मिलेगी।" यह कहकर अब्दुल्ला ने आँखें मूँद लीं।

पिता के इस अन्तिम परामर्श पर हसन को आश्चर्य हुआ। आत्महत्या करने की उस जैसे पंडित ने क्यों सलाह दी, वह सोचता रहा पर उसे कोई कारण न सूझा। पर ज्यों-ज्यों रोज़ बीतते गये त्यों-त्यों वह उस आदेश को भूलता गया और मजे में दिन काटने लगा। वह पढ़ा

लिखा तो था, पर उम्र छोटी ही थी। इसलिए उसने ऊँटपटाँग कामों में जल्दी ही अपना सारा धन खो दिया। आखिर उसके पास घर और बगीचा ही रह गये। गली में जाकर भीख माँगने के सिवाय उसके सामने और कोई रास्ता न था। आखिर जब यह परिस्थिति आयी, तो हसन जान सका कि उसके पिता ने क्यों ऐसी सलाह दी थी। भीख माँगने से तो आत्महत्या कई गुना अच्छी थी। उसने आत्महत्या करने की ठानी। एक पक्की रस्सी लेकर, वह बाग में गया।

सूखे पेड़ की बड़ी टहनी के नीचे दो पत्थर गड़े थे। रस्सी के एक सिरे को उस पत्थर से बाँधा और दूसरे सिरे को पेड़ पर से डालकर फन्दा बनाया। उसे गले में डालकर, पत्थर से वह कूदा। जब गला घुँटकर वह मूर्छित होने को था, तो टहनी यकायक टूटी। हसन नीचे गिर गया। उठा तो उसे आश्चर्य हुआ कि वह जीवित था। उसके सामने कोई चीज़ पत्थर की तरह चमक रही थी। वह सोच ही रहा था कि वह क्या थी कि एक और उसी तरह की चीज़ गिरी। हसन ने जब सिर उठाकर देखा तो टहनी के खोल में कुछ और हीरे थे।

वह झट उठा। गले का फन्दा ढीला किया। घर जाकर एक कुल्हाड़ी लाया। उसने टूटी हुई टहनी और पेड़ के तने को काटा। सारा तना खोखला था। उसमें हर तरह के कीमती रत्न थे।

हसन को इस बार पिता के परामर्श का अर्थ समझ में आया। उसके पिता ने उस पेड़ में एक खजाना उसके लिए छुपा रखा था। उसे यह तो सन्तोष था ही कि वह सम्पन्न हो गया था, साथ उसे

ऊँटपटाँग शौकों से भी विरक्ति हो गई थी। उसने डमास्कस छोड़ना चाहा। उसने फारस के शिराज नगर जाना चाहा। उसका पिता कहा करता था कि वहाँ जीवन सार्थक था। हसन फारसी जानता था। शिराज में उसके लिए जौहरी के तौर पर रहना कोई बड़ी बात न थी।

इसलिए हसन अपनी सारी सम्पत्ति लेकर यात्रा करके सकुशल शिराज पहुँचा। एक बड़ा-सा कमरा किराये पर लेकर झट अच्छे कपड़े बदले और घूम आने के लिए निकला।

मस्जिद में नमाज़ पढ़कर वह बाहर आ रहा था कि वहाँ राजा के वजीर ने उसे देखा और कहा—"तुम्हारे कपड़े देखकर लगता है कि तुम परदेसी हो। किस देश से आ रहे हो?"

"मैं डमास्कस का रहनेवाला हूँ। यहाँ के लोगों के साथ रहकर अपना जीवन सार्थक करने आया हूँ।" हसन ने विनय पूर्वक जवाब दिया।

यह सुन वजीर बड़ा खुश हुआ। उसने हसन से कहा—"तुमने बड़ी अच्छी तरह बात की। तुम्हारी उम्र कितनी है?"

"इस समय मेरी उम्र सोलह वर्ष की है।" हसन ने कहा।

"अच्छी उम्र में हो। तुम्हें राजा के पास ले जाऊँगा। वे तुम जैसे सुन्दर लड़कों को देखकर प्रसन्न होते हैं। अन्तःपुर के कर्मचारियों में वे तुम्हें भी शामिल कर सकते हैं। यदि तुम्हें कोई आपत्ति न हो, तो मेरे साथ चले आओ।" वजीर ने कहा।

हसन खुशी खुशी मान गया। उसके सौन्दर्य और बातचीत करने के तरीके ने ही केवल उसे प्रभावित नहीं किया था।

बल्कि वह उसके फारसी के स्पष्ट उच्चारण से भी प्रभावित था।

राजा, हसन को देख कर बड़ा खुश हुआ। उसने उसको द्वारपाल नियुक्त किया। वज़ीर ने, उसको द्वारपाल की पोषाक दी। उसे उसके काम बताये। उसे अपने ही आधीन रखा।

अन्तःपुर से सम्बन्धित, बारह द्वारपाल थे और कर्मचारियों के लिए, शाम अन्धेरा होने के बाद, राजमहल के चमन में घूमने की मनाई थी। क्योंकि वहाँ तब चमन में अन्तःपुर की स्त्रियाँ टहलने आती थीं। यदि कोई पुरुष उस समय वहाँ पाया जाता, तो उसका सिर कटवा दिया जाता।

एक दिन, हसन आलस्यवश इस नियम का उल्लंघन कर बैठा। वह दुपहर को बाग में गया और वहाँ एक बेन्च पर लेट गया और ठण्डी ठण्डी बयार में सो गया। उसने सपने में जब देखा कि कुछ स्त्रियाँ, कह रही हैं—"क्या खूबसूरत है....! वाह, वाह।" तो वह उठ बैठा। उसने देखा कि अन्धेरा हो गया था। सौभाग्यवश उस समय वहाँ कोई न था। उसने जो स्त्रियों की आवाज सुनी

थी वह सब सपना ही थी, यह सोच, वह जल्दी जल्दी चला। इतने में एक स्त्री का हँसना उसे सुनाई दिया। वह पूछ रही थी। "ऐसी भी क्या जल्दी है!"

हसन चमन के रास्तों पर इस तरह भागा, जैसे कोई तलवार लिये उसका पीछा कर रहा हो। जब वह एक मोड़ पर मुड़ा, तो एक स्त्री उसका रास्ता रोककर खड़ी थी। उसका मुँह ऐसा लगता था, जैसे चान्दनी ही स्त्री रूप में वहाँ खड़ी हो। हसन ने भय से काँपते हुए सिर झुका दिया। कभी उसने स्त्रियों से बातचीत न की थी।

"क्यों यों भागे जा रहे हो! क्या बात है!" उसने हसन से पूछा।

"यदि तुम इस अन्तःपुर में रहनेवाली हो, तो तुम जान सकती हो, मैं क्यों दौड़ रहा हूँ। यदि कोई पुरुष इस समय यहाँ घूम रहा होता है, तो उसका सिर कटवा दिया जाता है। कृपा करके रास्ता छोड़िये।" हसन ने कहा।

"....तो यह बात अब तुम्हें याद आई है! इतने अन्धेरे के बाद, चमन छोड़कर जाने से तो यही अच्छा है कि तुम रात भर यहाँ रहकर सवेरे जाओ।

राजमहल में जाना खतरनाक है।" उसने कहा।

हसन इतना काँप रहा था कि उसके आँखों से आँसू तक निकल आये थे। "आज, जो भी हो, वे मुझे मरवा देंगे। क्यों हत्या का पाप अपने सिर पर लेती है? मुझे जाने दो।" उसे पार कर उसने आगे जाना चाहा।

उसने एक हाथ से उसको पकड़ा और दूसरे हाथ से परदा हटाया। "मेरा मुँह देखकर मुझे बताओ कि मैं सुन्दर हूँ कि नहीं? मेरी उम्र अठारह वर्ष की है। कन्या हूँ। तुम्हारे सिवाय किसी पुरुष ने मेरा मुँह नहीं देखा है। यदि तुमने मुझे यों छोड़कर भाग जाना चाहा, तो मुझे बड़ा गुस्सा आयेगा।"

"महारानी! चन्द्रमा भी तुम्हारे मुँह के सामने फीका है। पर इस कारण मुझ पर आनेवाला खतरा कैसे कम हो सकता है?" हसन ने चिन्तित होकर कहा।

"तुम्हें खतरा तो अवश्य है, पर वह खतरा नहीं, जिसकी तुम आशंका कर रहे हो। तुम नहीं जानते मैं कौन हूँ। जब तक तुम मेरे पास हो, तब तक मेरे क्रोध से बड़ा कोई खतरा नहीं है। पहिले यह बताओ कि तुम हो कौन? यहाँ क्या काम कर रहे हो?" उसने पूछा।

"मेरा नाम हसन है। मैं डमास्कस का रहनेवाला हूँ। राजा ने मुझे द्वारपाल नियुक्त किया है। वजीर साहब की मुझ पर बड़ी कृपा है।" हसन ने कहा।

उस स्त्री ने कहा—"तो मैं तुम्हें अपना रहस्य बता देती हूँ। इस चान्दनी में तुम्हें देखकर, मुझे तुम पर प्रेम हो गया है। क्या तुम भी मुझे प्रेम करते हो?"

यह सुन हसन मुग्ध-सा हो गया। वह न जानता था कि स्त्री प्रेम किसे कहते हैं। वह बड़ी सुन्दर थी और उसे प्रेम कर रही थी। उसने उसके सामने घुटने टेक कर कहा—"यह गरीब तुम्हारे लिये प्राण तक दे देगा।"

उसी समय, खिलखिलाकर हँसती हुई, तालियाँ बजाती दस एक कन्यायें उस तरफ आईं। "बिचारे उस लड़के को, तुम तंग न करो, कैरिया।"

हसन कभी स्त्रियों के बीच में न घूमा था। उसे लगा कि उन सब ने मिलकर, उसका मजाक किया था। उसे गुस्सा आया। उसने अपने को अपमानित समझा। इतनी बेशर्म स्त्रियाँ भी कहीं होती हैं! उसने सोचा। वह करता भी तो क्या करता, सिर झुकाकर वह लड़कियों के बीच खड़ा हो गया।

उसी समय पेड़ पौधों के पीछे से बारहवीं लड़की आई। उसके आते ही सब चुप हो गईं। उसको देख कर, उन सब ने रास्ता दिया। उसने हसन के सामने आकर कहा—"तुमने यहाँ आकर केवल नियम का उल्लंघन ही नहीं किया बल्कि, स्त्रियों के पास आकर, उनसे प्रेम भिक्षा भी माँग रहे हो! तुम्हें फाँसी की सजा देने के लिए मैं मजबूर हूँ। छोटे हो। सुन्दर हो।"
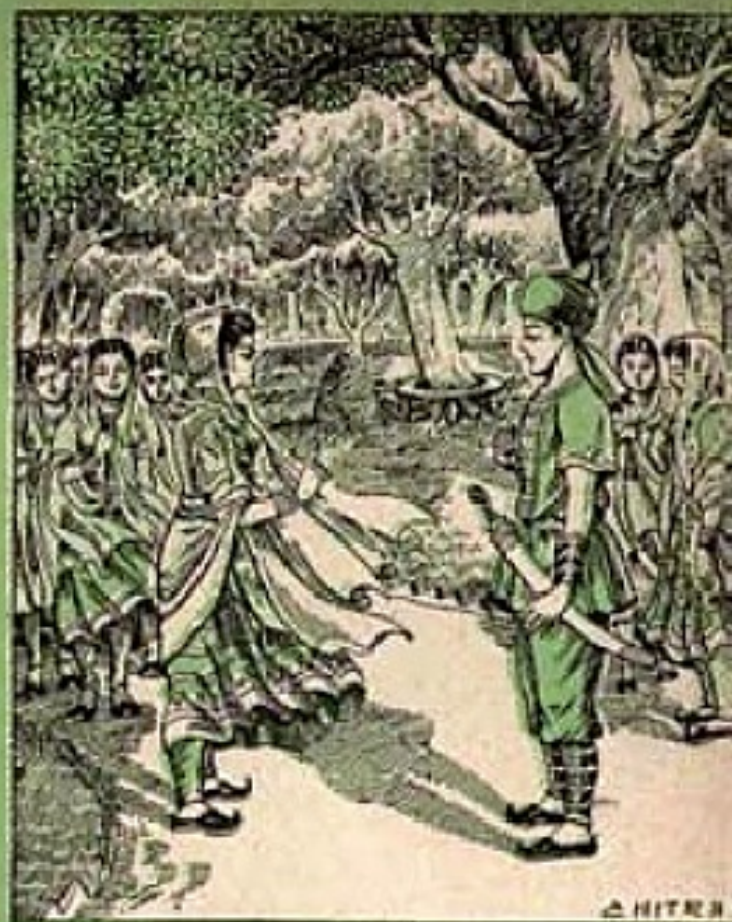
कैरिया नाम की लड़की ने सामने आकर, गिड़गिड़ाकर कहा—"महारानी, जुलेका यह नादान है। इसने अनजाने गल्ती की है। इसे माफ कर दो।"

जुलेका ने कुछ देर सोचकर कहा—"क्योंकि तुम माफ करने के लिए कह रहे हो इसलिए मैं इसे इस बार माफ कर रही हूँ। अगर हमने इसको यों ही जाने

दिया, तो वह सोचेगा कि हम बहुत सख्त दिल हैं। इसको यह दिखाने के लिए हमारे दिल खराब नहीं हैं, हमें कुछ करना होगा। पहिले इसे हम अन्तःपुर में ले जायेंगी। वहाँ अब तक किसी आदमी ने पर नहीं रखा है। यह ही पहिला आदमी होगा।" उसने यह कहकर लड़की को संकेत किया।

वह लड़की जाकर स्त्रियों की पोषाक ले आयी। हसन को उन्होंने वे कपड़े पहिनाये। वह स्त्री की तरह दिखाई देने लगा। जब जुलेका उसे उस वेष में देखकर सन्तुष्ट हो गई, तो वे उसको अन्तःपुर में ले गईं।

उसे वे खाली कमरे में ले गये। वहाँ कालीन पर जरी से जड़ी चादरें बिछी थीं। दीवारें संगमरमर की थीं। उनमें भी मोती वगैरह जड़ी थीं। एक लड़की ने हसन को छुपकर बताया कि जुलेका राजकुमारी थी और बाकी सहेलियाँ थीं और इस कमरे में वह प्रायः दावत वगैरह दिया करती थी। बाकी स्त्रियाँ चादरों के किनारे बैठ गईं और हसन और जुलेका को बीच में बिठाया। जुलेका ने भोजन परोसने की आज्ञा दी। सोलह सुन्दर स्त्रियों ने भोजन परोसने का प्रबन्ध किया।

हसन का स्त्रियों के प्रति भय नहीं गया था। वह रह रहकर कैरिया की ओर देखता। पर जब वह उसकी ओर देखती, तो वह सिर झुका लेता। जुलेका ने उसकी हालत देखकर पूछा—"हसन क्यों इतना डर रहे हो! हम तुम्हें खा नहीं जायेंगे। हमारी आज्ञा के बगैर कोई नहीं आ सकता। क्यों डरते हो! तुम जानते ही हो। मैं कौन हूँ! सिर उठाकर निश्चिन्त हो, हमारी तरफ़ देखो। देखकर यह

बताओ कि हम में से तुम्हें कौन जंची!" यह सुन हसन का हौसला बढ़ना तो दूर उसका डर और अधिक बढ़ गया। उसने चाहा, क्यों नहीं यहाँ जमीन फट जाती और क्यों नहीं मैं उसमें समा जाता! "शायद तुम यह सोच डर रहे हो कि यदि तुमने किसी को सुन्दर बताया तो और नाराज हो जायेंगी। हम में ऐसी कोई बात नहीं है। तुम निर्भीक हो, अपनी राय बताओ।" जुलेका ने उससे कहा।

हसन ने साहस करके सब स्त्रियों की ओर देखा। उनमें असुन्दर कोई न थी। परन्तु सबसे अधिक सुन्दर कैरिया ही थी। परन्तु वह यह कह नहीं पा रहा था। "मैं क्या कहूँ! यह नहीं सोच पा रहा हूँ। नक्षत्र चाहे कितने भी सुन्दर हो पर चन्द्रमा चन्द्रमा ही है।" कहकर उसने कैरिया की ओर देखा।

जुलेका ने कहा—"तुमने तो ऐसी बात कही जो औपचारिक रूप से कही जाती है। फिर भी मैं तुम्हें दोष नहीं देती। तुम मुझे छोड़कर मेरी सहेलियों में बताओ, सबसे अधिक सुन्दर कौन है!"

"कहो, कहो...." सबने हसन को बढ़ावा दिया।

हसन ने शर्मवर्म सब छोड़कर कैरिया की ओर अंगुली दिखाते हुए कहा—"महारानी, यह ही मुझे पसन्द है। खुदा की कसम, मैं उसे प्रेम करता हूँ। यह सुन औरों का क्रुद्ध होना तो अलग उन्होंने हँसते हुए एक दूसरे की ओर देखा। बहिन, बहिन में ही कितनी ही असूया, ईर्ष्या होती है। इनमें यह नहीं है। आश्चर्य होता है।" हसन ने सोचा। जुलेका ने अभिनन्दन करते हुए कहा—"तुमने ठीक कहा है हसन! हमारे ख्याल में भी वह सबसे अधिक सुन्दर है। इसके सौन्दर्य के सामने हमारा सौन्दर्य कुछ भी नहीं है। तुम उसके बारे में कुछ भी नहीं जानते।"

बाकी सहेलियों ने भी कैरिया के सौन्दर्य का अभिनन्दन किया। फिर उन्होंने हसन के हाथ में कैरिया का हाथ देकर आशीर्वाद दिया कि उन दोनों का विवाह हो। गप्प करते वह रात गुजर गई।

जुलेका ने उठकर कहा—"अब हमें जाकर सोना है। तुम्हारा प्रेम सफल होने के लिए मैं यथा शक्ति प्रयत्न करूँगी। फिलहाल तुम्हें अन्तःपुर से सुरक्षित बाहर भेजना है।" उसने एक बुढ़िया के कान में कुछ कहा। बुढ़िया ने एक बार हसन की ओर देखा, फिर उसका हाथ पकड़कर वह ले गई। छोटे छोटे कमरों में से वह होती हुई घूमघामकर वे एक छोटे से दरवाजे के पास आये। बुढ़िया ने उसका ताला खोलकर हसन को बाहर भेजा।

[अगले अंक में समाप्त]

चाणक्य की कथा

[२]

नन्द का राज्य तो समाप्त हो गया था। पर उसके अनुयायी तरह तरह की अराजकता जगह जगह फैलाने लगे। कहीं शान्ति न थी इस अराजकता का दमन करने के लिए चाणक्य को एक जुलाहा दिखाई दिया। वह जहाँ कहीं खटमल दिखाई देते वहाँ आग लगा रहा था। उसने सोचा कि अराजकता फैलानेवालों का यह जुलाहा दमन कर सकेगा। चाणक्य को उस पर भरोसा हो गया।

चन्द्रगुप्त को राज्य तो मिल गया था। पर खजाने में धन न था। यह कमी पूरी करने के लिए चाणक्य ने धोखा करके जुआ खेलकर कुछ सोना कमाया। परन्तु इस प्रकार खजाना भरना असम्भव था।

तब चाणक्य ने एक बात सोची। उसने नगर के धनियों को दावत पर बुलाया। उन्हें खूब खिलाया, पिलाया। जब और नशे में थे तो चाणक्य उठा, उसने कहा कि वह कितना सौभाग्यशाली था और राजा किस तरह उसका कहा सुनता था। तुरत और भी उठकर कहने लगे कि उनके पास कितना धन था। चाणक्य ने उनका धन लेकर, राजा का खजाना भर दिया।

चन्द्रगुप्त के राज्य में एक बार अकाल पड़ा। राजधानी में रहनेवाले जैनों को भिक्षा मिलनी भी कम हो गई। उनके आचार्य सुस्थित ने अपने शिष्यों को नगर छोड़कर और कहीं जाकर भीख माँगने के

सूर्य कुमार ओझा

कहा—"मैं भी कारण नहीं जानता। रोज, हमेशा की तरह भोजन परोसा जाता है। पर, यह कह सकता हूँ कि वह सब मेरे पेट में नहीं जा रहा है।"

चाणक्य को लगा कि कोई छुपा छुपा आकर उसके भोजन की चोरी कर रहा होगा। यह जानने के लिए कि चोरी हो रही है कि नहीं उसने चन्द्रगुप्त की भोजनशाला के चारों ओर एक चूर्ण छिड़कवाया। चन्द्रगुप्त के भोजन के बाद, उस चूर्ण पर किसी के पग चिन्ह दिखाई दिये।

जब अगले दिन चन्द्रगुप्त भोजन कर रहा था तब चाणक्य ने उस कमरे में खूब धुँआ करवाया। उस धुँए के कारण सब के आँखों से आँसू बहने लगे। उसके कारण जैन शिष्यों का अंजन भी बह गया। वे सब को दिखाई दिये। सब चकित हो उठे। उन्हें गुस्सा भी आया। परन्तु चाणक्य ने जैन सन्यासियों को नमस्कार करके मर्यादापूर्वक भिजवा दिया।

लिए कहा। सिवाय दो शिष्यों के सब छोड़कर चले गये। उन्होंने गुरु को छोड़कर न जाना चाहा। इसलिए उन्होंने भोजन पाने के लिए एक चाल चली। वे एक अंजन जानते थे। उस अंजन के लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता था। वे शिष्य अंजन लगाकर राजमहल में जाकर चन्द्रगुप्त के पास बैठकर उसके साथ खाना खाकर चले आते।

इस प्रकार कुछ दिन बीतने के बाद, चन्द्रगुप्त कमजोर होता गया। चाणक्य ने जब इसका कारण पूछा तो चन्द्रगुप्त ने

जब चन्द्रगुप्त यह सोच रहा था कि वह दूसरों की जूठन खाता आ रहा था, तो चाणक्य ने कहा कि भिक्षा देकर उसने पुण्य
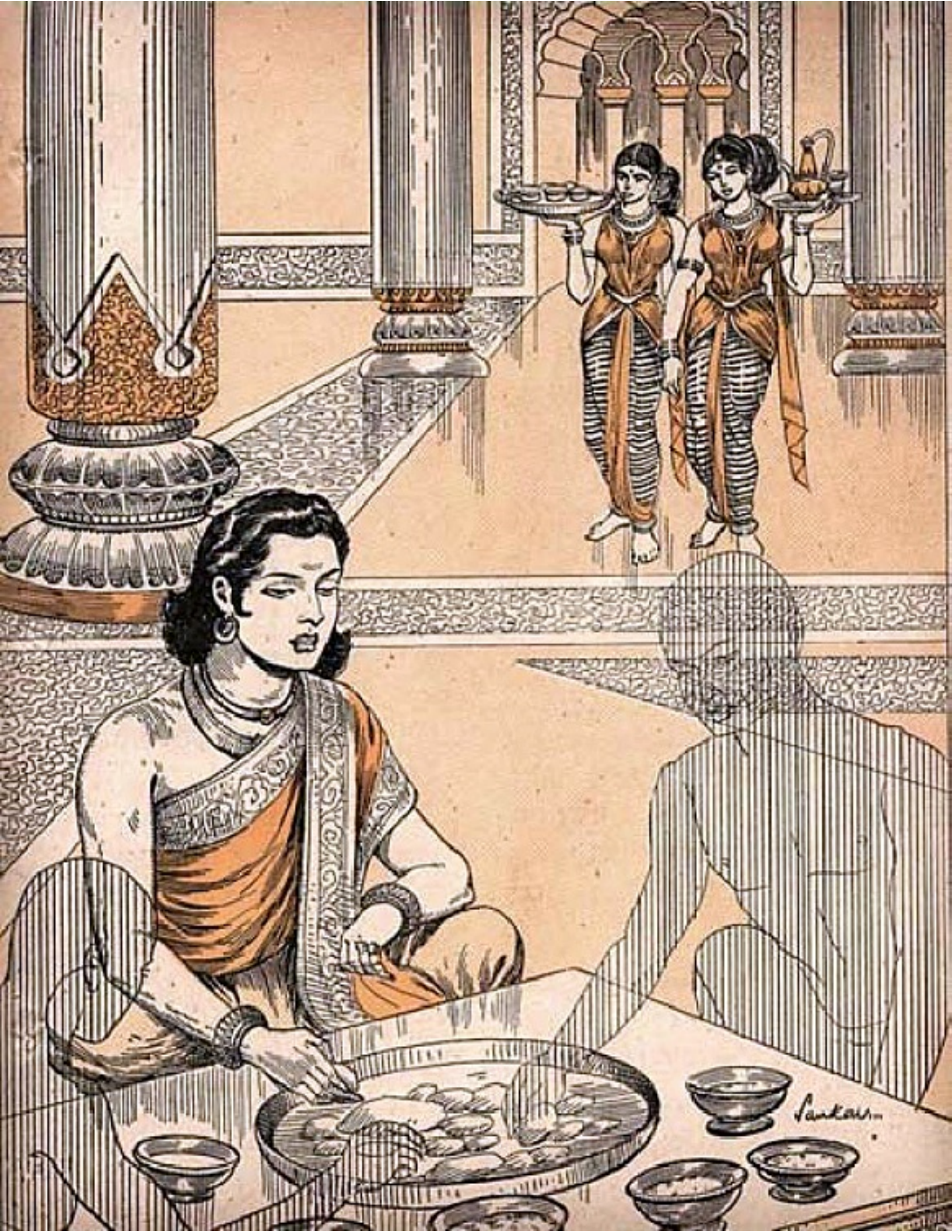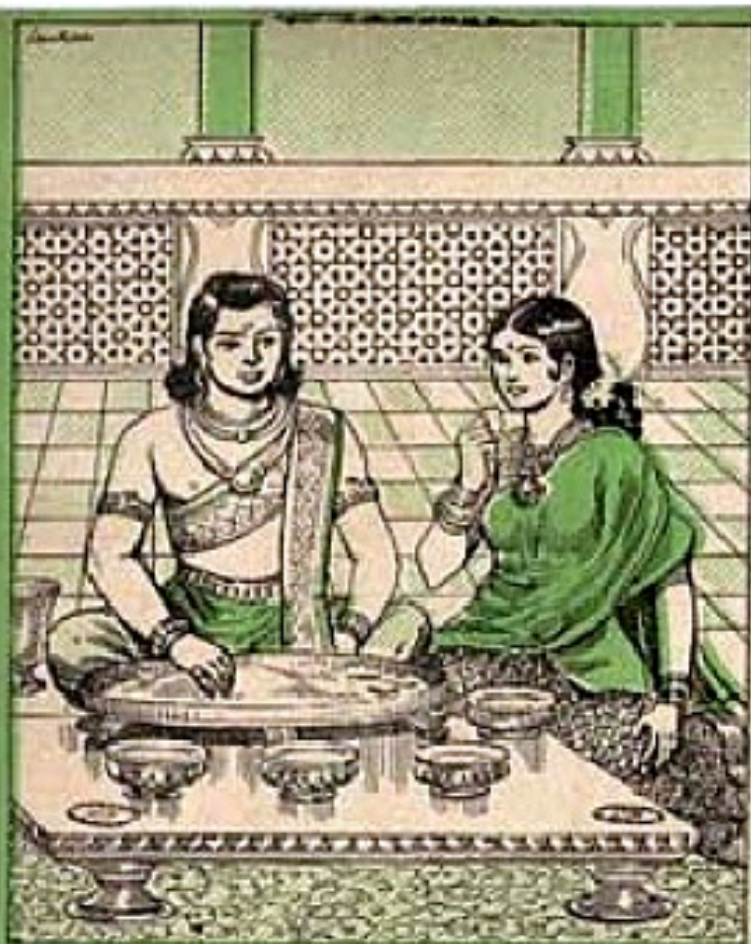
कमाया था। फिर भी चाणक्य ने आचार्य को बुलवाया। उसके शिष्यों के किये पर उसने आपत्ति प्रकट की।

"गलती तो आपके नागरिकों की है। यदि वे भिक्षा देते, तो यह परिस्थिति आती ही न।" आचार्य ने जवाब दिया। उसके बाद पाटलीपुत्र में जैन सन्यासियों की भिक्षा के लिए आवश्यक व्यवस्था की गई।

कहीं ऐसा न हो कि चन्द्रगुप्त के भोजन में कहीं कोई विष न मिला दे, चाणक्य ने उसके भोजन में विष मिलाने की आज्ञा दी। उस विष की मात्रा दिन प्रति दिन बढ़ायी गई। होते होते यह स्थिति आयी कि कोई विष उस पर कुछ न असर कर सकता था। यह चन्द्रगुप्त न जानता था।

दुर्धरा पूर्ण गर्भवती थी। वह एक दिन चन्द्रगुप्त के पास भोजन करते समय आ बैठी उसने उसको थोड़ा-सा भोजन खाया। क्योंकि उसमें विष था इसलिए वह तुरत मर गई।

उसी समय चाणक्य वहाँ आया। वह जान गया क्यों ऐसी दुर्घटना हुई थी। उसने तभी निष्प्राण हुई, दुर्धरा के पेट को काटकर बच्चा निकाला। तब तक एक बिन्दु विष बच्चे में भी चला गया था। इसलिए उस लड़के का नाम बिन्दुसार रखा गया।

चन्द्रगुप्त के मर जाने के बाद, चाणक्य ने बिन्दुसार का स्वयं पट्टाभिषेक करवाया। परन्तु वह बिन्दुसार के नीचे, बहुत दिन तक मन्त्री न रहा। चाणक्य ने सुबन्धु नामक व्यक्ति को राजनीति सिखाई। उसको अपना शिष्य बनाया। यह सुबन्धु स्वयं मन्त्री बनना चाहता था। उसने

बिन्दुसार से कहा कि वह चाणक्य का विश्वास न करे। उसी ने उसकी माता का पेट काटकर उसको निकाला था। जब बिन्दुसार ने इस सुबन्धु से पूछताछ की, तो मालूम हुआ कि ठीक ऐसा ही किया गया था। इसके बाद, चाणक्य से वह चिढ़ गया।

यह देख कि उसका विरोधी जीत गया था, चाणक्य ने वैराग्य स्वीकार कर लिया, पर उसने अपने विरोधी को क्षमा नहीं किया। सुबन्धु के पतन के लिए उसने एक चाल चली। उसने भोज पत्र पर कुछ लिखा। उन पत्रों और सुबन्धु की कुछ चीज़ों को, एक सुन्दर पेटी में रख कर, उस पेटी को उसने अपने सन्दूक में सुरक्षित रखा और उस पर ताला लगा दिया। उसने फिर अपनी सारी सम्पत्ति, निर्धनों को दान कर दी और नगर के बाहर जाकर, एक झोपड़ी में उपवास करने लगा।

उस समय बिन्दुसार को चाणक्य के बारे में असलियत मालूम हुई। वह बड़ा पछताया, उसने चाणक्य के पास जाकर उससे मन्त्री पदवी स्वीकार करने के लिए
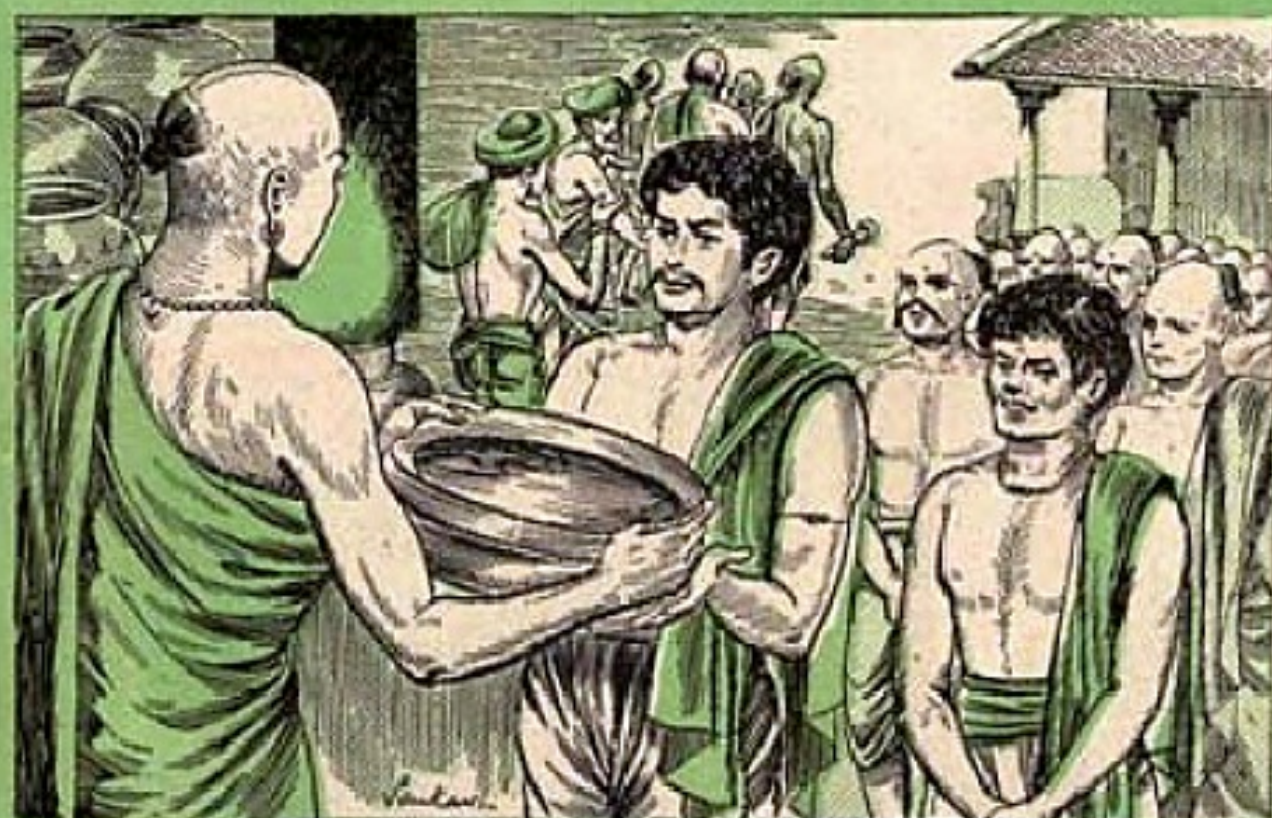
कहा। परन्तु चाणक्य ने अपना उपवास न छोड़ा। बिन्दुसार आकर सुबन्धु पर क्रुद्ध हुआ। सुबन्धु ने कहा कि वह निर्दोष था। उसने कहा कि वह चाणक्य का मन बदल देगा। वह चाणक्य के पास गया। वह उसके सामने अनुनय-विनय करता गया और छुपे छुपे उसने छप्पर को आग छुआ दी। उससे छप्पर जल गया और चाणक्य उसी में राख हो गया।

बिन्दुसार की अनुमति पर सुबन्धु ने चाणक्य के घर में प्रवेश किया। जब धन के लिए सारा घर छान डाला, तो एक सुन्दर सन्दूक में एक पेटी निकली। उसे खोलते ही सुगन्धी आई। फिर उसे पाँच पत्र दिखाई दिये। सुबन्धु ने सोचा कि धन आदि के बारे में ब्यौरा उन पत्रों पर होगा पर जब उसने उनको पढ़ा, तो वह भौंचका रह गया। लिखा था कि जो सन्यासी का जीवन व्यतीत नहीं करते, वे इसे सूँघकर मर जायेंगे। यह जानने के लिए वह ठीक था कि नहीं, उसने एक आदमी को वह गन्ध सुँघवायी। वह तुरत गिर गया। बहुत दवाइयाँ बरती गईं, फायदा नहीं हुआ। यह डरकर कि उसकी भी यही गति होगी तुरत सुबन्धु ने अपना मन्त्री पद छोड़ दिया और एक जैन गुरु के पास उसने सन्यास ले लिया। क्योंकि वह स्वतः सन्यासी नहीं हुआ था, इसलिए और सन्यासी, उसको दीन दृष्टि से देखते। चाणक्य के विरुद्ध उसने षड़यन्त्र तो किया था पर उसको उसका लाभ न हुआ। चाणक्य ने मर कर भी अपने विरोधी से बदला लिया।

[समाप्त]

किष्किन्धा काण्ड

तारा ने लक्ष्मण को रोककर कहा—

"जल्दी में सुग्रीव की निन्दा न करो। उसने राम के काम की उपेक्षा नहीं की है। सुग्रीव ने घोषणा करवाई है कि सब वानरों को पन्द्रह दिन में आना होगा, नहीं तो उनको मौत की सजा भुगतनी होगी। आज ही पन्द्रह दिन खतम होते हैं। सुग्रीव, जो बहुत दिन कष्ट झेलता रहा आज भोग विलास में मस्त है, यह सच है। परन्तु तुम इस बात के लिए माफ़ कर सकते हो। तुम क्रुद्ध न होओ।" तारा की बातें सुनकर लक्ष्मण ज़रा नरमाया। यह देख सुग्रीव का हौसला कुछ बढ़ा। उसने लक्ष्मण से कहा—

"लक्ष्मण, राम ने जितनी मेरी सहायता की है, उसके लिए जो कुछ मैं करने जा रहा हूँ वह कितना है। यदि राम के काम में मैंने अगर जाने अनजाने कुछ ढील दिखाई है, तो मुझे माफ़ कीजिये। संसार में कोई ऐसा नहीं है, जिसने गल्ती न की हो।"

लक्ष्मण ने कहा—"सुग्रीव तुम्हारी सहायता, हमारे लिए देवताओं की सहायता के समान है। तुम एक बार आकर दुखी राम को आश्वासन दो।

उनका दुख देखकर ही मैं क्रुद्ध हो उठा था। मुझे क्षमा करो।"

सुग्रीव ने हनुमान की ओर मुड़कर कहा—"वानरों को बुला लाने के लिए मैंने पहिले ही दूतों को भेज दिया है। अब कुछ और वानरों को भेजकर पर्वतों में, समुद्र तट पर और वनों में रहनेवाले तरह तरह के वानरों को जल्दी बुलवाने की व्यवस्था करो। उनको लाने के लिए हर तरह के उपाय बरतो। जो वानर दस दिन में नहीं आयेगा, उसको प्राणदण्ड मिलेगा। यह मेरी आज्ञा है। यह घोषणा निकलवा दो।" इस आज्ञा के अनुसार हनुमान ने कई सारे वानरों को अनेक दिशाओं की ओर भेजा।

धीमे-धीमे वानरों के झुन्ड किष्किन्धा आने लगे। काले वानर, पीले वानर, सफ़ेद वानर, भयंकर लाल लाल वानर, सभी तरह के वानर आये। वानर अपने साथ तरह तरह के फल और सुगन्धवाले फूल लाये। उन्होंने उनको सुग्रीव को वे उपहार में दिये। सुग्रीव पर, जिसने

उनके लिए बड़े पैमाने पर अब काम शुरु कर दिया था लक्ष्मण को अब विश्वास हो गया। उसने स्नेहवश उसको अपनी जगह बुलाया।

सुग्रीव ने उसका निमन्त्रण स्वीकार करके पाल्की मँगवायी। उसमें, उसने अपने साथ लक्ष्मण को भी बिठाया। ये फिर राम के निवास की ओर निकले। वानरों ने उस पर श्वेत छत्र किया। चामर हिलाये। शंख बजाये। भेरियाँ बजायीं। सैकड़ों वानर पाल्की के साथ चलने लगे।

प्रस्रवण पर्वत पर गुफा के पास पाल्की पहुँची। सुग्रीव लक्ष्मण के साथ पाल्की से उतरा। राम के पास आकर उसने हाथ उठाकर नमस्कार किया और वानरों ने भी उसी प्रकार नमस्कार किया। उनके हाथ राम को कमल डंडियों की तरह दिखाई दिये।

राम ने सुग्रीव के पास आकर उसका आलिंगन किया।

औपचारिक रूप से उन्होंने उसकी मदद माँगी। इस पर सुग्रीव ने कहा—"मेरे दूतों के कहने पर संसार के

कोने कोने से पराक्रमी वानर लाखों और करोड़ों की संख्या में आ गये हैं। ये रावण को मारकर, सीता को आपके पास ला सकते हैं।"

राम ने यह सुनकर सन्तुष्ट होकर कहा—"सुग्रीव तुम जैसों की सहायता से मैं रावण को मारकर सीता को ला सकता हूँ।"

किष्किन्धा के आसपास अब भी धूल उड़ रही थी। भूमि काँप रही थी। वानर आते जा रहे थे। तारा का पिता सुषेण दस हजार करोड़ वानरों के साथ आया। सुग्रीव का मामा, रूप का पिता तार, अरब वानरों के साथ आया। हनुमान का पिता केसरी, इक्कीस हजार आठ सौ, सत्तर वानरों के साथ आया। लंगूरों का राजा गवाक्ष हजार करोड़ लंगूरों के साथ आया। दो धूम्र अरब भालुओं को लाया। इसी प्रकार पवन, नील, गवय, दरीमुख, अश्विनी देवताओं के लड़के मैंदद्विद, गज, जाम्बवन्त, रुमावन्त, गन्धमादन, अंगद आदि भी असंख्य सेना लाये। इन वानरों को वनों में, झरनों के पास पहाड़ों पर ठहराया गया। सुग्रीव ने इतनी सारी वानर सेना को राम को सौंपा और उनसे कहा कि वे जिस तरह चाहें, उसका उपयोग करें।

"सुग्रीव पहिले हमें दो बातें तय करनी है। पहिले यह जानना है कि सीता जीवित है कि नहीं। फिर यह पता लगाना है कि रावण का निवास स्थल कहाँ है। इन दो बातों के मालूम होने पर ही आगे क्या करना है, सोचना है। मैं और लक्ष्मण हम दोनों, ये बातें नहीं जान सकते। यह काम तुम से ही हो सकता है।"

तब सुग्रीव ने विनत नामक वानर नेता को बुलाकर कहा—"तुम लाख वानरों को लेकर पूर्व की ओर जाओ। रावण का निवास स्थल जानकर, सीता की स्थिति आदि के बारे में जानकर आओ। इस तरह जो ढूंढने के लिए भेजे जायेंगे अगर एक महीने में वापिस न आये, तो उनको मौत की सजा दी जायेगी।" सुग्रीव ने कहा।

फिर उसने नील, हनुमान, महाबल जाम्बवन्त, महोत्र, शरारि, शरगुल्मण, गज, गवाक्ष, गवयुण, वृषभ, मैन्द, द्विविद, विजय, गन्धमादन, उल्कामुख, असंग, अंगद आदि वीरों को दक्षिण की ओर खोजने के लिए कहा—"तुम दक्षिण के देशों को छान डालो। तुम दक्षिण में समुद्र के पास पहुँचकर, उसे पार करने का कोई उपाय सोचो।

क्योंकि समुद्र में सौ योजनोंवाली लंका है। वह ही रावण का निवासस्थल है। सीता के लिए वहाँ अच्छी तरह खोजो। समुद्र में और भी पर्वत हैं। दक्षिण देशों में यदि और भी कोई रहस्यपूर्ण प्रदेश हो, तो उनको भी देख आओ। एक महीने के अन्दर जो आकर मुझे बतायेंगे कि उन्होंने "सीता को देखा है" मैं उनको अपने भोग भाग्य में बराबर हिस्सा दूँगा और मैं उसे अपने प्राणों से भी अधिक समझूँगा।"

इसी प्रकार सुग्रीव ने पश्चिम की ओर तारा के पिता सुषेण आदि को दो लाख वानरों के साथ भेजा। लाख वानरों के साथ शतवली को उत्तर की ओर भेजा।

यद्यपि वह इतने वानरों को इतनी दिशाओं में भेज रहा था पर उसकी

सारी आशायें हनुमान पर ही थीं। इसलिए उसने हनुमान से कहा—"तुम भूमि, जल और वायु में आ सकते हो। तीनों लोक तुम्हें मालूम हैं। तुम में अपने पिता वायु के समान प्रतिभा है। इसलिए सीता को पाने के लिए तुम्हें ही सारे प्रयत्न करने होंगे।"

यह सुनते ही राम जान गये कि सुग्रीव को हनुमान पर कितना विश्वास था। राम को भी यह आशा होने लगी कि हनुमान ही यह कार्य कर सकेगा। इसलिए उन्होंने अपनी अंगूठी निकालकर इसलिए उसे दी, ताकि उसके कारण सीता उसे पहिचान सके।

राम ने हनुमान से कहा—"सीता, यह अंगूठी देखकर ही सीता विश्वास करेगी, भयभीत न होगी।" हनुमान उस अंगूठी को सिर पर रखकर, राम को नमस्कार करके निकल पड़ा।

"हनुमान! मेरी सब आशायें तुम पर ही हैं। तुम यथाशक्ति सीता को ढूँढ़ने का प्रयत्न करो।" राम ने हनुमान से जाते समय कहा।

हनुमान अपने साथ के वानरों के साथ चल पड़ा और वानर समूह भी और दिशाओं की ओर निकल पड़े।

वे एक महीने बाद ही लौटते और राम और लक्ष्मण ने यह महीना प्रस्रवण पर्वत पर ही सीता के समाचार की प्रतीक्षा में काटा।

सुग्रीव को ऐसा लगा, जैसे उसने एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी पूरी कर दी हो।

उन वानरों ने, जो सुग्रीव द्वारा भेजे गये थे, चारों दिशाओं में सीता को खोजा। वे दिन भर सीता को खोजते

और रात को किसी बाग में मिलते और वहाँ सो जाते। इस तरह वे एक महीने तक करते रहे।

महीने के पूरा होने पर पूर्व, पश्चिम, उत्तर से वानर वापिस आये। उन्होंने सुग्रीव को आकर बताया कि वे सीता का पता नहीं लगा सके थे। और जो दक्षिण की ओर गये थे वे सीता को देखते देखते विंध्या पर्वत के पास पहुँचे।

विंध्या पर्वत साधारण पर्वत नहीं है। उस पर कितने ही शिखर हैं। कितनी ही गुफ़ायें हैं। उसके पास कितनी ही नदियाँ हैं। कितने ही दुर्गम अरण्य हैं। वानरों ने बड़ी सावधानी से सारा प्रदेश देखा।

एक जगह उनको एक भयंकर राक्षस दिखाई दिया। उसे ही रावण समझकर, उसको अंगद ने इस बुरी तरह मारा कि वह खून की उल्टी करता मर गया। उसके पास ही उन्होंने सीता को खोजा। पर वह वहाँ नहीं था।

आखिर सब थककर एक वृक्ष के पास बैठ गये। तब अंगद ने औरों से कहा—"सीता को ढूँढने का प्रयत्न अभी तक सफल नहीं हुआ है। बहुत दिन हो गये हैं। सुग्रीव सख्त दण्ड देता है। इसलिए हमें और मेहनत करनी होगी। सोना भी छोड़ना होगा।"

गन्धमादन ने भी अंगद के इस निश्चय का समर्थन किया।

वे तुरत उठे और विंध्या पर्वत में सीता को खोजने लगे। वे अभी पर्वतों में ही थे कि एक महीने की अवधि समाप्त हो गई।

<u>संसार के आश्चर्य :</u>

२१. मृत्यु की घाटी

यह अमेरिका के केलिफोर्निया प्रान्त में है। इसमें कई यात्री मर चुके हैं। इसमें न एक पौधा होता है, न कोई प्राणी ही जीवित रहता है। अमेरिका में इससे कोई गहरी जगह नहीं है। यह समुद्र की सतह से २७५ फीट नीचे है। अमेरिका का सब से ऊँचा शिखर माउन्ट ह्विटनी (१४५०२ फीट) यहाँ से ७५ मील की दूरी पर है।
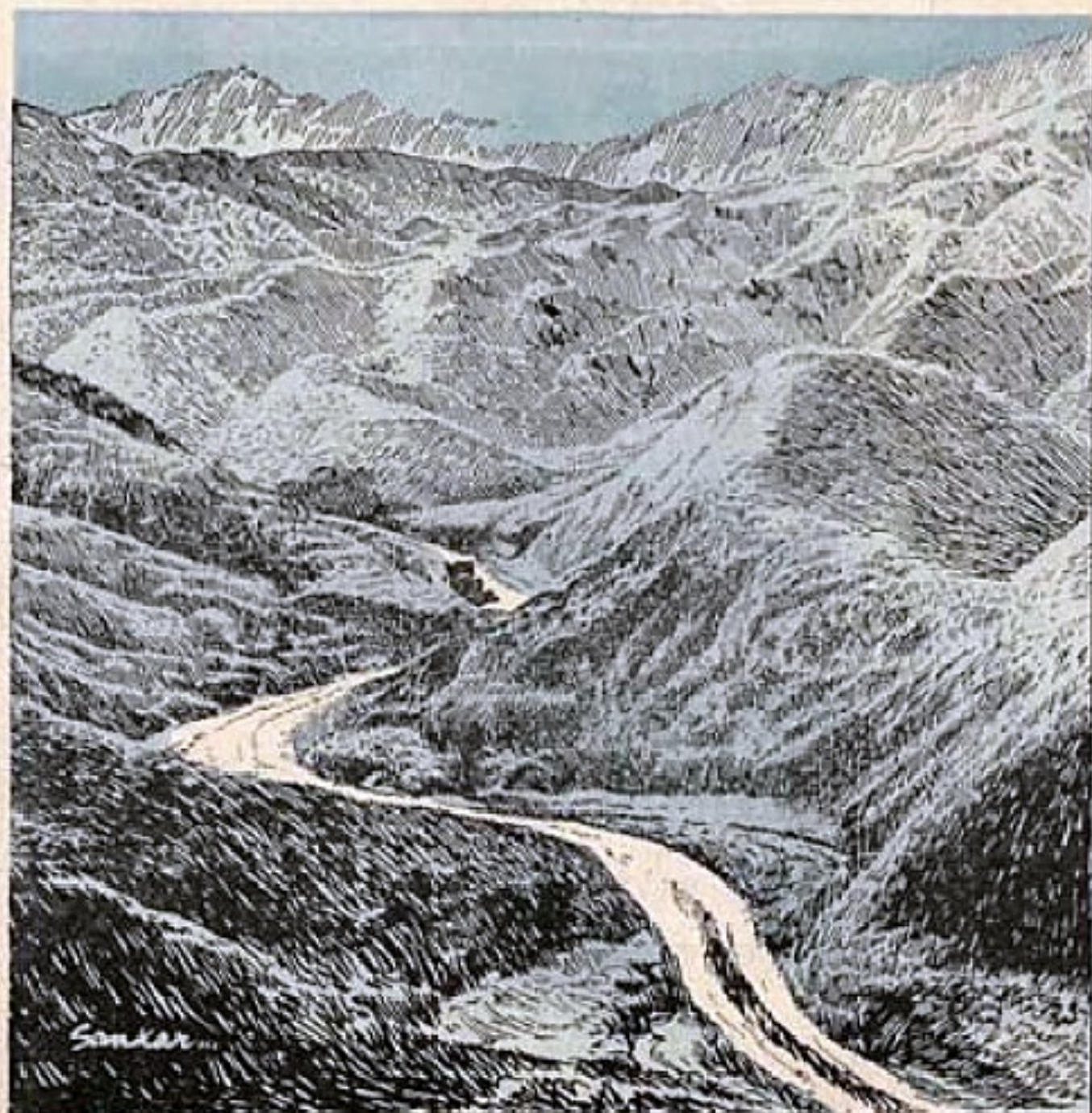
१. जीतसिंग गुरुन्ग, देहरादून

क्या आप साहस की कहानियाँ भी "चन्दामामा" में छापेंगे जिनसे बालकों में साहस का संचार हो?

हम छापते आये हैं, छाप रहे हैं। छापेंगे।

२. सुन्दरलाल जोशी, बालवाड़ा

क्या आप भविष्य में विश्वप्रसिद्ध कहानी लेखक टालस्टाय की बालोपयोगी कहानियों को अपनी पत्रिका में स्थान देंगे?

हाँ, हाँ, सुविधानुसार अवश्य देंगे।

३. जस्वीर बाजवा करनाल

आप जंगली जानवरों के बारे में कहानियाँ क्यों नहीं छापते?

जंगली जानवर भी हमारी कहानियों में यदा कदा मुख्य पात्रों के रूप में आते हैं। उनके बारे में कहानियाँ भी हम दे चुके हैं।

४. जैनबाबूलाल, बम्बई

क्या आप हिमालय पर हुई लड़ाई की घटनाओं का वर्णन करेंगे?

अगर हम उन्हें रोचक, रोमांचकारी समझेंगे, तो देने का प्रयत्न करेंगे।

५. जयप्रकाश शरीफ, कमरहट्टी

क्या आप दास, बास और टाइगर की कथा को बड़े रूप में दे सकते हैं?

अभी तो नहीं।

६. जयकुमार, देहली

आप "प्रश्नोत्तर" स्तम्भ में केवल "चन्दामामा" सम्बन्धी प्रश्नों को ही क्यों स्थान देते हैं? और प्रश्नों को क्यों नहीं देते?

चूँकि, कई ऐसे नये पाठक हैं, जो चन्दामामा के बारे में जानना चाहते हैं!

७. अनुसूया, पटना

आप प्रश्नोत्तर के स्थान पर क्यों नहीं, कोई कहानी देते?

चूँकि, नये और पुराने पाठकों के लिए "प्रश्नोत्तर" जैसे स्तम्भ की भी उपयोगिता है।

८. धूर्जति, कलकत्ता

आप "चन्दामामा" में प्रकाशित धारावाहिक उपन्यासों को पुस्तकाकार में क्यों नहीं प्रकाशित करते?

हम "विचित्र जुड़वें" प्रकाशित कर चुके हैं और भी यथा समय, सुविधानुसार प्रकाशित करेंगे।

९. हरिकेश, रोहतर

आप "चन्दामामा" में हरियाने की लोट कथायें क्यों नहीं देते?

अगर मिलीं तो जरूर देंगे।

१०. महेशकुमार, लखनऊ

आप कवितायें क्यों नहीं प्रकाशित करते?

क्योंकि "चन्दामामा" प्रधानतः कहानियों की पत्रिका है।

११. धनवती, करनाल

आप हमेशा, पौराणिक पुराने ढर्रे की ही कहानियाँ क्यों देते हैं?

हम नयी कहानियाँ भी देते हैं। पर क्या माँ बच्चों को पौराणिक पुराने ढर्रे की कहानियाँ पसन्द नहीं हैं!

Photo by P. R. Shinde

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

गाँव के झूले लताओं पर!

प्रेषक:
धीरेन्द्र गुप्ता-जसवन्त नगर

Photo by P. R. Shinde
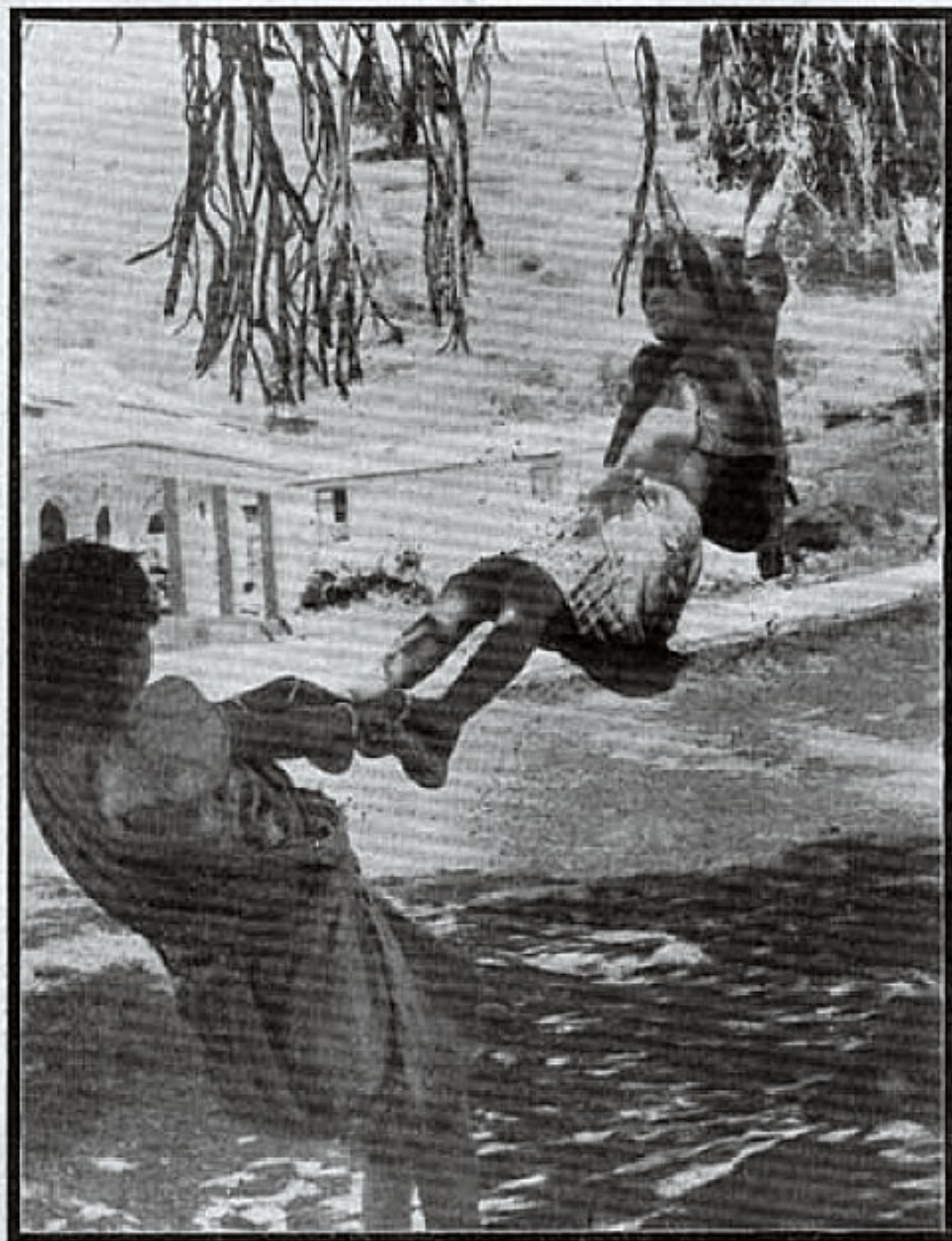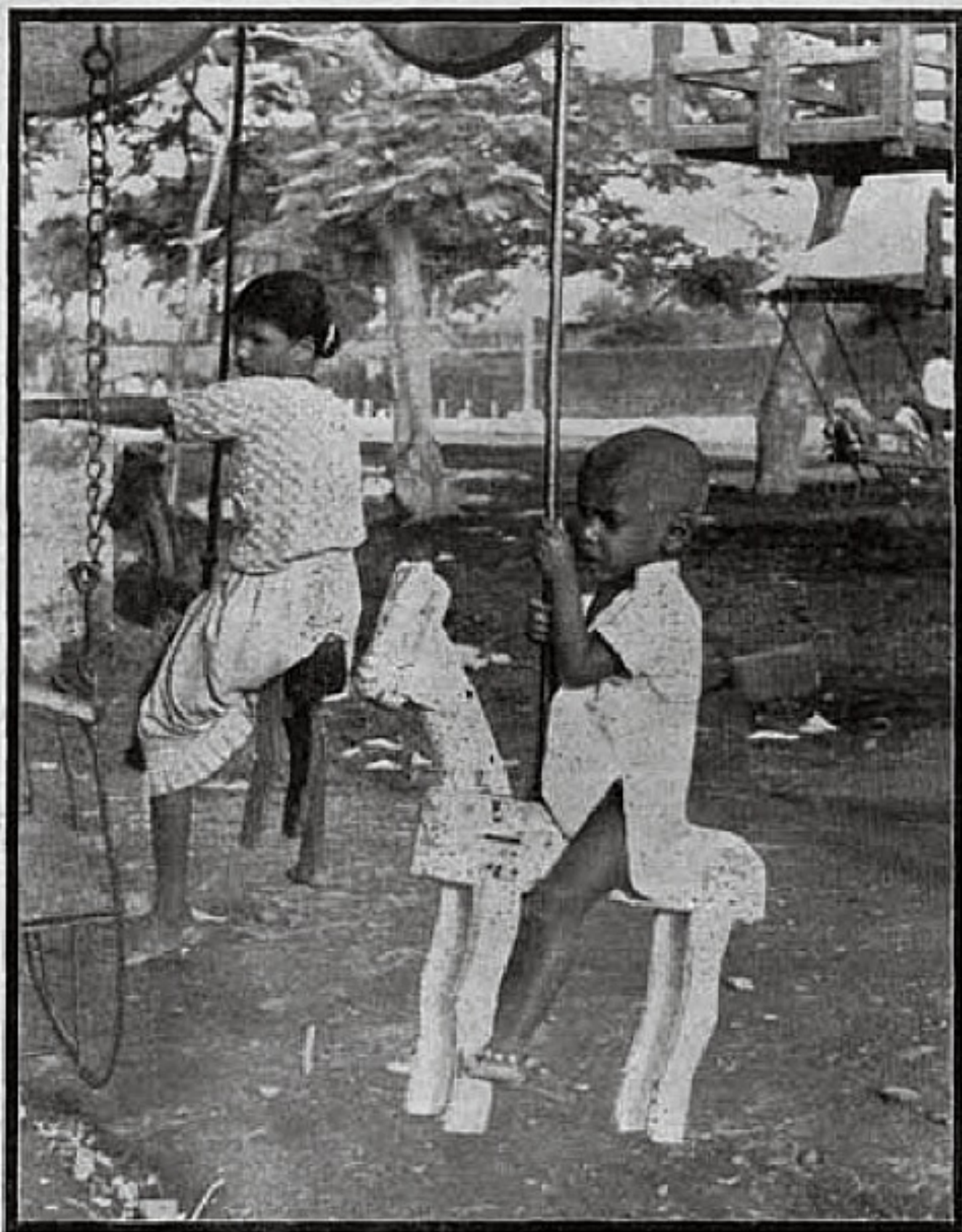
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

नगर के झूले घोड़ों पर !!

प्रेषक :
शैलेन्द्र गुप्ता-जसवन्त नगर

उल्का

★ मनुष्य अनादिकाल से उल्काओं के बारे में जानता है। मिश्र के वासियों ने उल्काओं के बारे में जो कुछ लिखा था, वह आज भी लेनिनग्राड हर्मिटेज में सुरक्षित है। यह ही उल्काओं के विषय में उपलब्ध सब से प्राचीन सामग्री है।

★ चीन के साहित्य में यह लिखित है कि १७६८ ई. पू. "नक्षत्र वर्षा" हुई थी। यह शायद उल्काओं की बौछार रही होगी।

★ १८ वीं सदी के अन्त से उल्काओं के बारे में अलग खगोलशास्त्र प्रारम्भ हुआ। इससे यह साबित किया गया कि उल्को में अन्तर्ग्रहप्रान्त से आती हैं। उल्को में हमें (८० से १२० किलोमीटर) की ऊँचाई पर दिखाई देती है। उनकी रफ्तार (१० से ७० किलोमीटर प्रति सेकन्ड है कि यह भी सिद्ध हुआ कि उल्काओं और धूमकेतु का सम्बन्ध है।

★ आकाश में उल्काओं के समूह भी होते हैं। ऐसे समूहों में "लियोनिड समूह" भी है। यह ३३ वर्ष में एक बार दिखाई देता है। अनेक देशों के रिकार्डों के परिशीलन से पता लगता है। ३,५०० वर्षों से पहिले से "लियोनिड" दिखाई दे रहा है।

★ उल्का का पहिला पहल फोटोग्राफ प्रागा (जेकोस्लाकिया) १८८५ में लिया गया। आज उल्का के बारे में परिशोध करने के लिए दूर दूर प्रान्तों की यात्रायें भी करते हैं।

★ उल्का का फोटोग्राफों द्वारा परिशोधन करने में अमेरिकी बहुत आगे बढ़े हुए हैं। जो जो उल्का आँखों द्वारा देखी जी सकती है। उस उसकी उन्होंने फोटोग्राफ लिया है।

★ उल्का के बारे में प्राप्त सामग्री के कारण हवा के स्तरों के बारे में १२० किलोमीटर की ऊँचाई तक जाना जा सकता है।

★ प्राय उल्कायें कणों में होती हैं। कुछ बड़ी भी होती हैं। यह हवा के ऊँचे स्तरों पर जलने लगते हैं और कई स्तरों तक यों जलते आते हैं। इस तरह के उल्काओं को अग्निगोल कहा जाता है।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

नवम्बर १९६३ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ सितम्बर १९६३ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

सितम्बर – प्रतियोगिता – फल

सितम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: **गाँव के झूले लताओं पर!**
दूसरा फ़ोटो: **नगर के झूले घोड़ों पर!!**

प्रेषक: **शैलेन्द्रकुमार गुप्ता,**
कक्षा १० ब, हिन्दी विद्यालय, पो० जसवन्त नगर, (इटावा)

महाभारत

समय बीतता गया। धृतराष्ट्र का आदर करके, पाण्डव सुखपूर्वक राज्य कर रहे थे। विदुर, संजय, युयुत्सु, कृप, धृतराष्ट्र के पास रहा करते थे। व्यास कभी कभी आकर उनको कहानियाँ सुनाया करते युधिष्ठिर बिना उनकी सलाह के कभी कुछ नहीं किया करते। गान्धारी और धृतराष्ट्र को अपने मृत पुत्र याद न आयें इसलिए पाण्डवों ने आवश्यक प्रबन्ध किये। जिस प्रकार पाण्डव, धृतराष्ट्र की सेवा कर रहे थे उसी प्रकार कुन्ती को द्रौपदी, सुभद्रा, उलूपी आदि देखा करतीं। युधिष्ठिर ने आज्ञा भी दी कि जो कोई उस वृद्ध दम्पति का दिल दुखायेगा उसको दण्ड दिया जायेगा। वे भी मृत को भूलकर पाण्डवों को अपना पुत्र समझकर प्यार करने लगे।

परन्तु भीम अकेला ही धृतराष्ट्र से चिढ़ा हुआ था और जब कभी धृतराष्ट्र भीम को देखता, तो उसमें भी पुत्रों का शोक फिर उमड़ आता।

इस तरह पन्द्रह वर्ष बीत गये। परन्तु भीम का व्यवहार बिल्कुल नहीं बदला। वह रह रहकर धृतराष्ट्र के दिल को चुभानेवाली बातें किया करता। वह धृतराष्ट्र के सेवकों को जमा करके, उनको काम करने से रोकता। वह मित्रों से कहा करता "इन हाथों से धृतराष्ट्र और गान्धारी के पुत्रों को मारा है। अब भी जब कभी उनको याद करता हूँ, तो मेरा खून खोल उठता है। जिन हाथों ने उनकी बलि ली है, उन पर चन्दन लगाओ।"

ये बातें सुनकर वह वृद्ध दम्पति दुखी हुआ करता। युधिष्ठिर न भीम के इस व्यवहार से परिचित था न वह यह जानता था कि इन बातों से धृतराष्ट्र और गान्धारी को कितना दुख हो रहा था। गान्धारी और धृतराष्ट्र ने खाना छोड़ दिया। दिन में एक ही बार खाया करते। चटाई पर सोते। वे कमजोर होने लगे। कुछ समय बाद धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर से कहा—"मैं वानप्रस्थ लेकर तपस्या करना चाहता हूँ। मेरे साथ गान्धारी, विदुर, संजय, कृपा आयेंगे। जाने की अनुमति दो।"

यह सुन युधिष्ठिर ने कहा—"जब तुम्हें वैराग्य हो गया है, तो मुझे राज्य की भी क्या जरूरत है! यदि मैंने तुम्हें इस आयु में वनों में कष्ट झेलने दिया, तो संसार क्या कहेगा! यदि मन में तुम्हारे कोई दुख हो, तो बताओ। मैं उसे हटाऊँगा। पर मैं तुम्हें जंगलों में जाने के लिए नहीं मानूँगा।"

इससे धृतराष्ट्र का दुख ही बढ़ा। पर उसका निर्णय नहीं बदला। उस समय व्यास ने आकर युधिष्ठिर को समझाया कि धृतराष्ट्र का निर्णय ठीक ही था।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'